अधिक लाभ उठा सकते हैं। कोई यह न जाने कि मैं किसी मतलब से प्रशंसा कर रहा हूँ, पण्डित जी से साधारण दूरकी मित्रता के सिवा मेरा और कोई सम्बन्ध नहीं है, मैंने जो कुछ लिखा है वह केवल सच्चे मनसे न्यायधर्म का पालन किया है, परमात्मा उन को इस लाभदायक पुस्तक प्रकाशन का यश दे, और सर्व देश में इस पुस्तक का प्रचार करे—

॥ दोहा छन्द ॥

रत्न द्वीप, निधि, चन्द्रमा,
सम्वत बीच नवीन ।
'अफसूं' श्री 'बेताब' ने,
पुस्तक मुद्रित कीन ॥

"१९७९"

"संख्या सूचक मन्त्र विम्वाक्षरानुसार

हिन्दी सुभाषितोष्ट ये, छपी बढे नितमान ।
प्यारी पुस्तक डालगुणि, अफसूं सम्वत जान ॥

"१९७९"

नम्र

अफसूँ

(काशी निवासी)

॥ ॐ कवये नम ॥

हिन्दी सुभाषित

-->> ❦ <<--

पण्डित राम रक्खा मल राम फनि

द्वारा सम्पादित

अ+उ+म्, महिमा

ओमुच्चारण होतही, टिके न विघ्न विषाद ।
स्यार भागते हैं यथा, सुनि केहरिको नाद ॥

अगुवा अवगुण

सबसे आगे होयके, कबहु न करिये बात ।
सुधरे-काज, समाज फल, बिगरे गारी खात ॥

अच्छोमे बुराई का लेश

लघु कलंक भी स्वच्छमे, समझ पडे ततकाल ।
दूरहि ते चुगली करत, ज्यों दर्पण मे बाल ॥

अज्ञानकृत अनादर

भले बुरे सो एकसी, मूढ़न की परतीत ।
गुञ्जा मम तोलत कनक, तुला पलाकी रीति

गुण जाने बिन गुणिन को, होत नहीं सत्कार
गज मुक्ता तजि भिल्लनी, धारत गुञ्जा हार

अरे हंस या नगरमें जैयो आप विचार
कागनसो जिन प्रीति करि, कोकिल दई बिडार

अज्ञानी जानत नहीं, गुणिजनको सत्कार
जिमि गुलाब गुडहर सुमन, भेद न जान गँवार

साईं घोडे अछत ही, गधहन पायो राज
कौआ लीजे हाथ मे, दूर कीजिये बाज
दूर कीजिये बाज, राज पुनि ऐसो आयो
सिंह कीजिये क़ैद स्यार गज राज चढायो
कहि गिरधर कविराय जहाँ यह बूझ बधाई
तहाँ नकीजे भोर साझ उठि चलिये साईं

राम कवि राजा प्रजा जागे गुण गान लागे,
सबके समाई लहैं सार निज घरकी ।
चकवादि पक्षीके विरहके विनाश कारी,
कमल कुटुम्बको हुलासकी खबरकी ।
मुदित जहान होत उदित भए तें जाके,

करत प्रकाश व्यथा हरै चराचरकी।
पड़े न दिखाई जो पै तुमको उलूक-
तेरी आखकी खुटाई या खुटाई दिनकर की।

मेहुंड बबूरको लगावे जो जतन करि,
काटत चमेली चम्पा चन्दन जुहिनको।
हिंसा करि हस और कोकिला कलापिनकी,
आदर समेत पालै वायस मलिनको।
गधे गजराजको समान मान होत जहा,
एकसे कपूर औ कपास लगें जिनको।
हमे कमलाकर न देश दिखलावै वह,
दूरसे हमारे हैं प्रणाम कोटि तिनको॥

अज्ञानानन्द

दोष-कोष गुन बन गये, हुई हियेकी अन्ध
उल्लू खण्डर उजाड़को, समझत स्वर्गानन्द
जो विषया सन्तन तजी, मूढ ताहि लपटात
ज्यों नर डारत वमन कर श्वान स्वादसों खात
रहिमन राम न उर धरै, रहत विषय लपटाय
पशु खर खाये स्वादसों, गुर गुलियाये खाय
करि फुलेलको आचमन, मीठो कहत सराहि
चुप करहे गन्धी चतुर, इत्र दिखावत काहि

अज्ञानी परोपकारकी सार नहीं जानता

बुद्धि हीन जानत नहीं, परहित कारक रीति
निज मुरगहीं ने करत है, जिम वालक-कर प्रीति



अति निन्दा

अति परिचय ते होत है, अरुचि अनादर भाय
मलियागिरिकी भीलनी, चन्दन देति जराय
अति सम्पति दिन पायके, अति मत करिये कोय
दुर्योधन अति मान तें, भयौ निधन कुल खोय
अतिहीं सरल न हूजिये, देखिलेहु बन राय
सीधे सीधे काटिये, वाको तरु बच जाय
सबको रसमें राखिये, अन्त लीजिये नाहिं
विष निकस्यो अति मथनतें, रत्नाकर हू माहिं
चोरा चोरी प्रीतिके, कीन्हें बढत हुलास
अति खाये उपजै अरुचि, थोरी बात मिठास
अति कबहू नहिं कीजिये, किये पाव दुख सोय
सुधा सुरस भोजन विमल, अति खाये विष होय

चौपाई

सुन प्रभु बहुत अवज्ञा कीये, उपज क्रोध ज्ञानिहुके हीये
अति सघर्षण करै जो कोई, अनल प्रकट चदनते होई

अनन्य प्रेम

जिन नैननमे पी बसे, आन बसे क्यो आन
अबाबील घर करत है, सूनो देरि मकान
प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहा समाय
भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिरजाय
सरवरके खग एकसे, बाढत प्रीत न धीम
पै मरालको मानसर, एकै ठौर रहीम

अन्याय दंड

अवगुण करता औरही, देत औरको मार
जो पहुचे नहिं रुद्र पैं, जारत विरहिन मार
और करै अपराध कुड, और पाव फल भोग
अति विचित्र भगवन्त गति, को जग जाने जोग

अनुचित संतोष

छात्र, छत्र—धर जो कहीं, कर बैठे सन्तोष
बढ़े नहीं दिन दिन घटे, विद्याधनका कोष

अप्रिय सत्य

हितहूकी कहिये न तिहि, जो नर होय अबोध
ज्यों नकटेको आरसी, होत दिखाये क्रोध
रोष भरी न उचारिये, यदपि यथारथ बात
कहै अन्ध कों आंधरौ, मान बुरो मनरात

कछु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको संग
पाथर डारे कीचमें उछरि बिगारे अंग
रिस उपजावक सत्य को, कहिये नहीं उमाहि
दहत रहत जिय अन्धको,कहत अन्ध जो ताहि

अप्रिय

सो ताके अवगुण कहै, जो जिहि चाहै नाहिं
तपत,कलंकी,विषभर्यो,बिरहिन शशिहि कहाहि
जाको जह स्वारथ सधै, सोही ताहि सुहात
चोर न प्यारी चाँदनी , जैसी कारी रात

अपना दोष कोई नहीं देखता

सब देखे पै आपनो, दोष न देखै कोय
करै उजेरो दीप पै, तरे अँधेरो होय
अपने दोष न देखिहैं, पर निन्दा विस्तारि
ज्यों कुलटा कुलजानको, कहै अपावन नारि

अपना वही है जो सदा साथ रहै

सोई अपनो आपनो, रहै निरन्तर साथ
होत परायो आपनो, शस्त्र पराये हाथ
नेगी दूर न होत है यह जानो तहकीक
मिटत न ज्यों क्योंही किये, जो हाथनकी लीक
अपना तबतक ही रहै, रहै पीठ असवार
तनु घोड़ा ले चोरको, पहुचत कोस हजार

अपने हितकी बात सबको भली लगत नहिं

भले लगें सबको कहौ, कोऊ हितके बैन
पिय आगमके कागबच, विरहिनको सुखदैन
जो जाके हितकी कहै, सो ताको अभिराम
पिय आगम भाखी भलौ वायस विरहि [illegible]
कोउ कहै हितकी कहै, है नाहीं [illegible]
सबै उडावत कागको, पै विरहिन [illegible]
कह्यो मूढ की बातको, करिये जो [illegible]
सौंह दिवाये औरके, पै [illegible]
अपनी कीरति कान सुन, होत न [illegible]
नाग मन्त्रके सुनतही, विर [illegible]

अपव्ययका अन्त

दीप बार ले आजतू, [illegible]
काल अँधेरी रातमें, [illegible]

अपवाद भय

लोकनके अपवाद को, [illegible]
रघुपति सीता परि हरी, [illegible]

अभयता

जो चाहै सोई करे, [illegible]
सबके देखत नगन है, [illegible]

डरे न कबहू दुष्ट सों, जाहि प्रेमकी बान
'भौंर' न छोड़े केतकी, तीखे कटक जान

अभ्यास महिमा

करत करत अभ्यासके, जड़ मति होत सुजान
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान
जन्मत ही पावै नहीं, भली बुरी कुछ बात
बूझत बूझत पाइये, ज्यों ज्यों समझत जात
एक एक अक्षर पढे, जाने ग्रन्थ विचार
पैड पैड हू चलत जो, पहुंचत कोस हजार
कठिन कला हू आय है करत करत अभ्यास
नट जो चाले बरत पर साधे बरस छ मास
कन कन जोरे मन जुरे, काटे निवरे सोय
बूंद बूंद ज्यों घट भरे, टपकत बीते तोय
यत्न और अभ्यास कर, मुशकिल हो आसान
अभ्यासी मरते नहीं, कर मारक-विष पान
शशि सकोच साहस सलिल, मान सनेह रहीम
बढत बढत बढजात है, घटत घटत घट सीम
यह रहीम निज सग लै, जन्मत जगत न कोय
बैर, प्रीति, अभ्यास, यश, होत होत ही होय
बढत बढत सम्पति सलिल, मन सरोज बढ़िजाय -
घटत घटत पुनि ना घटे,वरु समूल कुम्हलाय

करत करत अभ्यास तें, शनै शनै हो सोय
    बूंद बूंद घट भरत है, कन कन मन भर होय
पावै फल अभ्यास तें, बिन अभ्यास न पाय
    चल च्योंटी पहुची उदधि, न चलें गरुड न जाय
करत सदा अभ्यास जो निश्चयही फल पाय
    गिरि गिरि च्योंटी भीति तें, अन्त शिखर चढजाय
दुख पाये बिनहू कहू, गुण पावत हैं कोय
    सहे बेध बन्धन सुमन, तब गुण संयुत होय
बिद्या गुरुकी भक्ति तें, के कीने अभ्यास
    भील द्रोणके बिन कहे, सीख्यो बान बिलास
बिद्या याद किये बिना, बिसरत इहि उरमान
    बिगर जात बिन खबर तें, ढोली केसो पान

अभिलाषा पूरी होनेपर दशा

मन भावनके मिलनको, सुखको नाहिन छोर
    बोल उठे नचि नचि उठे, मोर सुनत घनघोर
बिरहानल व्याकुल भए, आया प्रीतम गेह
    जैसे आवत भाग तें, आग लगेपर मेह
मनभावनके मिलन तें, क्यो मन हो न हुलास ?
    मिल सनेह गुण करत है, चारो ओर प्रकास

निज मन भावनके मिले, का को जिय न खिलाय
दिनकर दर्श निहार कै, खिलत कमल हर्षाय
मलिन देह वेई वमन, मलिन विरह के रूप
पिय आगम औरै वढी, आनन ओप अनूप

अलस निन्दा

साथी मिले जु आलसी, ठनै कर्म सों वैर
एक पाँव सो जात तव, चलत न दूजो पैर

असत्य निन्दा

मिथ्या भाषी साच हू, कहै न माने कोय
भाण्ड पुकारै पीर बश, मिस समझैं जग लोय
अन्तर अँगुरी चारको, साँच झूठमें होय
सब मानैं देखी कही, सुनी न माने कोय
कबहू झूठी बात को, जो करिहै पछपात
झूठे सग झूठो परत, फिर पाछे पछतात
जग परतीत बढाइये, रहिये साचे होय
झूठे नरकी साचि हू, साखि न माने कोय

घनाक्षरी

भानु छुप जात अन्धकार के समूह आगे,
छुपत कृशानु अति तृणके गिराये तें।
विद्या लुप जात है अविद्याके समाज विच,
शील लुप जात है अशीलके दबाये तें।

समवर्ण धातु सग सुवर्ण रजत छुपै,
छुपत सुगन्ध दुर्गन्ध नियगयेतै ।
अन्तमें असत्यको विनाश होत "रामकवि"
सत्य प्रगटात शुभ कालहुके पायँ तै

अवस्था परिवर्तन

सुख बीते दुख होत है, दुख बीते सुख होत
दिवसगये ज्यों निशउदित निशगति दिवस उदोत
एक दशा निबहे नहीं, नहिं पछतावहु कोय
रविहूकी इक दिवसमें, तीन अवस्था होय
घटत बढत सम्पति सुमति, गति अरहटकी जोय
रीती घटका भरत है, भरी सु रीती होय
जो पावै अतिउच्च पद, ताको पतन निदान
ज्यों तप तप मध्यान लो, अस्त होत है भान
होत बुरे हू ते भलो, काहू समय प्रकास
अधिक मास तै ज्यों मिटयो, पाडव फिर वनवास
सरस निरस नर होत है, समय पाय सब कोय
दिनमें परम प्रकाश रवि, चन्द मन्द द्युति होय
धनी होत निर्धन बहुरि, निर्धन तैं धनवान
बडी होति निशि शीत ऋतु, ज्यों ग्रीषम दिनमान
तब लगि सहिये विरहदुख, जब लगि आव सुवार
दुख गये तब सुक्ख है, जानै सब ससार

जिन दिन देखे वे कुसुम, गई सु बीत बहार
अब अलि रही गुलाबमें, अपत कटीली डार

इहि आशा अटक्यो रहै, अलि गुलाबके मूल
अइहै बहुर बसन्त ऋतु, इन डारन वे फूल

भरत प्यास पिंजरा पर्यो, सुआ दिननके फेर
आदर दै दै बोलयतु, बाँयस बलिकी बेर

कुण्डलिया

साईं अवसरके पड़े, कौन सहै दुख द्वन्द
जाय बिकाने डोम घर वे राजा हरिचन्द
वे राजा हरिचन्द, करैं मरघट रखवारी
धरे तपस्वी वेष फिरैं, अर्जुन बलधारी
तपै रसोई भीम महाबलि परघर माई
को न करै घट काम, परै अवसरके साईं

छप्पय

कबौ द्वार प्रतिहार, कबौ दर दर फिरत नर
कबौं देत धन कोटि, कबौ करतर करत कर
कबौ नृपति सुरा चहँत, कहत कर रहत वचन बम
कबौ दास लघु दास, करत उपहास जिभ्य रस
कछु जान न सम्पति गरजिये, विपत न ये उर धारिये
हिय हार न मानत सत पुरुष, 'नरहरि' हरिहि सँभारिये

कुण्डलिया

नर वर नयन उघार अब देख गौर करि तौर,
आज दिवस है और कछु, काल दिवस है और
काल दिवसहै और, दौर इमि चले रैन दिन
कभी रंक हो राव, कभी हो राव राज बिन
कभी मंगलाचार, कभी रोवत विलाप कर
कभी मोद अरु धूम, कभी हो विकल दुखित नर
यह अचल न चल दल सम सदा, दुख सुख माने अज्ञ जन
कह 'राम' वीर सुइ धीर नर, इक रस रहत सुधार पन

घनाक्षरी

पात झर जात द्रुम द्युति ते विहीन होत,
आवत वसंत दल फूल अधिकाई है।
ग्रीष्मकी गरमी अपनात पंच भूतन को,
पावसके मेघ आ अनंत झर लाई है।
केला फटजात उटजात फल पावन तें,
तावन तें सोना गहि लेन सुघराई है।
रामकवि काहेको विनाश मन मूढ़ होत,
होयेगा हुलास दुःख दारुण विताई है।

हरि गीत

संसारमें किसका समय है एकसा रहता सदा
है निशि दिवा सी घूमती सर्वत्र विपदा संपदा

जो आज एक अनाथ है नरनाथ कल होता वही
जो आज उत्सव मग्न है कल शोकसे रोता वही
उन्नत रहा होगा कभी जो हो रहा अवनत अभी
जो होरहा अवनत अभी उन्नत रहा होगा कभी
हँसते प्रथम जो पद्म हैं तम पंकमें फँसते वही।
मुरझे पड़े रहते कुसुम जो अन्तमें हँसते वही
उन्नति तथा अवनति प्रकृतिका नियम एक अखण्ड है
चढ़ता प्रथम जो व्योममें गिरता वही मार्तण्ड है
अतएव अवनति ही हमारी कहरही उन्नति कला
उत्थान ही जिसका नहीं उसका पतन ही क्या भला
उत्थानके पीछे पतन संभव सदा है सर्वथा
प्रौढत्वके पीछे स्वयं वृद्धत्व होता है यथा
हाँ। किन्तु अवनति भी हमारी है समुन्नति सी बढ़ी
जैसी बढ़ी थी पूर्णिमा वैसी अमावस्या बढ़ी
है नेचरलका नियम यह चलना हमेशा चाल पर
इसही लिये रहता नहीं है कोई यकसा हाल पर
नीचे पड़ेको है उठाता प्रेम-से पुचकार कर
ऊंचे चढ़ेको है गिराता मार थप्पड़ गाल पर

गीतिका

कल जिसे देखा था बैठा शहनशाही तख्त पर
आज वो बेकल पड़ा रोता ज़मीने सख्त पर

अब जिसे तुम हो हिकारतकी नजर से देखत
देखलेना कल उसीको नाज करते वख्तपर

सवैया

रेमन साहसी साहस राख सुसाहससे सब जेर फिरेंगे
त्योंपद्माकर या सुखमें दु ख त्यो दुखमेसुखसेर फिरेंगे
वैसेहि घेन बजावत श्याम सुनाम हमारेहि टेर फिरेंगे
एक दिना नहि एक दिना कबहू फिर वे दिन फेर फिरेंगे

छप्पय

व उठते भी हैं अवश्य ही, जो गिरते हैं
दुर्दिन के ही बाद, सुदिन सबके फिरते हैं
देखे दारुण दु ख, वही नर फिर सुख पावे
अवनतिके उपरान्त, घडी उन्नतिकी आवे
रवि रात बीतने पर प्रगट, होते प्रात समयमें
बस यही सोचकर आपभी, धीरज रखिये हृदयमें

होता प्रथम वसन्त, ग्रीष्म ऋतु फिर आती है
चले पसीना अंग, आग सी लग जाती है
पत्ते फल या फूल, बिना जल जलजाते हैं
पशु पक्षी भी घोर घाममें घबराते हैं
फिर शीघ्र देखते देखते, हरीभरी होती मही
आजाती वर्षा ऋतु भली सुख देनी तत्काल ही

कवियोंका सर्वस्व, स्वर्ग की शोभा भारी
शिवके भी सिर चढा, और आकाश बिहारी
अमृत सहोदर चन्द्र, कला जब घटने लगती
तब होता है क्षीण, और श्री लटने लगती
वह किन्तु शीघ्र ही पूर्ण हो,होता है फिर-अभ्युदय
है ठीक नियम यह प्रकृतिका, परिवर्तन हो हर समय

इतने बड़े अनन्त तेजकी, राशि दिवाकर
तपते तीनो लोक बीच पूजित हो घर घर
किन्तु समय पर राहु उन्हें ग्रस लेता जाकर
कुछ कर सकते नही,हजारों यद्यपि हैं कर
वह पहले होता अस्त या ग्रस्त समस्त प्रभा रहित
फिर होते मुक्त प्रकाशसे युक्त पूर्वमें अभ्युदित

जीव मरण के बाद जन्म पाता है देखो
कृष्ण पक्षके बाद, शुक्ल आता है देखो
चलती है हेमन्त हवा, जब जोर दिखाती
तब होता पतझाड, न पत्ती रहने पाती
फिर वही वृक्ष होते हरे, नव पल्लव शोभित सभी
बस इसी तरह होंगे सुखी, उन्नति युत हमभी कभी

सवैया

कबहू तो घटा घनघोर उठै, कबहू नहिं नेकहु बादर है
कबहू जग मे सनमान बडो, कबहू घर माफ न आदर है

कबहू तन शाल दुशाल घने , कबहू सिरपै नहिं चादरहै
मन राम भजो जिय सोच न जी , यह कादिरकी गति नादरहै

आत्मश्लाघा

आपहि कहा बखानिये, भले बुरे को जोग
उठे घन की बात को, कहैं बटाऊ लोग
आत्म प्रशंसासे मिलत, नेकहु मान न मोद
निज कर कुच मींडे वधू, लहत न मदन विनोद
यहक बडाई आपनी, कत राचत मति भूल
बिन मधु मधुकरके हिये, गडे न गुडहर फूल
कहत निपुणाई गुण बिना, रहिमन निपुन हजूर
मानो टेरत बिटप चढि, मो समान को कूर
निज मुख निज कीरति कथा, बरनत ओछे लोय
जिमि खाली घट करत रव, मौन सपूरण होय
झूठें हू है मूढ नर, निज कीरति करि गान
त्यों गुणि जन की नजर में , नर ते बनत हवान

आयु परिमाण

धर्म कर्म कर जान के, जीवन को अति अल्प
विद्या, धन, सचन विषय , आयु मान शत कल्प

आश्रय प्रशंसा

पडित बनिता अरु लता, शोभित आश्रय पाय
है मानिक बहु मोल को, हेम जटित छवि छाय

बिन आश्रय सोभित नही, पंडित, लतिका, नार
मणि माणिक बहु मूल्य है, वे भी हेमाधार

घनाक्षरी

चतुर गवैया होय वेद को पढैया होय
समर लडैया होय रण भूमि चौडी मे
जानत समैया होय मीर कवि त्योही चाहे
बात को जनैया होय नैनकी कनौडी मे
नीति पै चलैया होय पर उपकार आदि,
कुशल करैया काज हाथकी हथौडीमें
गुनन को शीला होय तौऊ न वसीला बिन,
कोऊ हो पुछैया भैया तेहि तीन कौडीमें

इनसे बचो

पाप मूल जग लोभ है, व्याधि मूल मद पान
दु ख मूल अज्ञान है, तीनों त्याग सुजान
पर - सेवा सब सुख हरत, परनारी धन प्रान
कीर्ति हनत पर अन्न नित, विप्र द्वेष कल्याण,

ईश्वरको सबकी चिन्ता है

प्रभुको चिन्ता सबनकी, आपुन करिये नाहि
जन्म अगाऊ भरत है, दूध मात थन माहि
एक एकके नामको, रचि राखे जगदीस
जैसे भरिये पेट को, सबको निहुरे सीस

जिहि जेतो निहचै तितौ, देत दैव पहुचाय
सक्कर खोरे को मिलै, जैसे सक्कर आय
यथा योग सब मिलत है, जो निधि लिख्यो अँकूर
खल गुर भोग गँवारनो, रानी पाय कपूर
अमर वेल बिन मूलकी, प्रति पालत है ताहि
रहिमन ऐसे प्रभुहि तज, खोजत फिरिये काहि
काम कछु आवै नही, मोल न कोऊ लेइ
बाजू टूटे बाजको, साहिब चारा देइ
रहिमन कोऊ काकरै, ज्वारी चोर लबार
जो पति राखन हार है, माखन चाखन हार
अजगर करै न चाकरी, पच्छी करै न काम
दास मलूका यों कहै, सबके दाता राम

सवैया

दात न थे तब दूध दियो, जब दात दिये तो अनाजहि देई
जीव बसै जलमें थलमे, तिनकी सुधि लेइ सो तेरीहु लेई
जानको देत अजानको देत, जहानको देत सो ताहूको मेंई
क्यो अब सोच करे मन मूरख, स च करे कछु आज न देई

दोहा

प्रलय करन बरसन लगे, जुरि जलधर इक साथ
सुरपति गर्व हरो हरषि, गिरिधर गिरि धर हाथ

उद्यम महिमा

हलन चलनकी शक्ति है, तबलों उद्यम ठान
अजगर लू मृगपति बदन, मृग न परत हैं आन
विद्या धन उद्यम बिना, कहिये पावत कौन
बिना डुलाये ना मिले, ज्यों पंखाकी पौन
श्रमही ते सब मिलत है, बिन श्रम मिले न काहि
सीधी उंगुली घी जम्यो, क्योंहू निकलै नाहि
उद्यम बुधि बल से मिलें, तब पावत सुख साज
अंध कंध चढि पंगु ज्यो, सबै सुधारत काज
प्रेरकही तें होत है, कारज सिद्धि निदान
चढे धनुष हू ना चले, बिना चलाये बान
बिन उद्यम मसलत किये, कारज सिद्धि न ठाय
रोग न जानत औषधी, जान खाय तो जाय
गुनी होय श्रम कष्ट करि, लहै राज दरबार
बींध बंध मुक्ता सहै, तब उर हार बिहार
चले पिपिलका जो सदा, समुद पार ह्वै जाय
जो न चले तो गरुड हू पैंड हू चले न पाय
भयो विमुक्त न ज्ञान सो, कर्म हीन नर कोय
बिन खाये मधु बोधसो, मुख मीठो नहिं होय
मुख मे भोजन निकटको, बिन उद्योग न जाय
बछरा थन खीचे बिना, पियत न दूध अघाय

बिन उद्यम नहिं पाइये, कर्म लिख्यो है जौन
बिन जलपान न जात है प्यास गंग तट भौन

घनाक्षरी

सामिलमें पीरमें शरीरमे न भेद राखै,
हिम्मत कपटको उघारै तो उघर जाय।
ऐसे ठान ठानै तौ बिनाहू जन्त्र मन्त्र किये,
सापके जहरको उतारै तो उतर जाय।
ठाकुर कहत कछु कठिन न जानो अब,
हिम्मत कियेते कहो कहा न सुधर जाय।
चार जने चारहू दिशाते चारों कोन गहि,
मेरुको हिलायके उखारें तो उखर जाय।
जाते हैं समुद्र बंध रहते न अद्रि अडे,
अग्नि, जल, वायु आदि हुक्म उठाते हैं।
हुकम उठाते है उमग भरे वीर वीर,
होते धन धान्य शाह मस्तक नवाते हैं।
मस्तक नवाते हैं जगतके सकल लोग,
गिरधर मूर्ति निज हिय में बिठाते हैं।
हिय मे बिठाते है त्यों महिमा पराक्रम की,
पौरुष दिखाते क्या क्या काम हो न जाते हैं।

उदरपोषण, पेटस्तोत्र सहित

उदर भरनके कारने, प्रानी करत इलाज
नाचै याचे रनभिरै राचै काज अकाज
दुर भर उदर दरीनके, होत न तन संताप
तो जन जनकी को सहत तरजन गरजन ताप
हरी उदर दुष्ट भरन भय, हर अरधंगी दार
जोन होयतौ क्यों रहे, अबलो तनय कुमार
उदर अग्न नरतें भलौ, राहु उदर तें हीन
कबहू नाहिन होत है, जन जनको आधीन
भरत पेट नट निरत कै उरत न करन उपाय
धरत वरत परयाय अरु, परत वरत लपटाय
दीन धनी आधीन है, सीस नवावत काहि
मान भग की भूमि यह, पेट दिखावत ताहि
रूखे सूखे उदर को, भरे होत संतुष्ट
राम न लाख करोर के, पाये तुष्ट न दुष्ट
पेट एकसों लग रहे, अन्नोदक सबन्ध
चोली दामन ज्यो रच्यो, जगत जजीरा बन्ध
रहिमन कहत सु पेट सो क्यो न भयो तू पीठ
रीते अनरीते करत, भरे विगारत दीठ
बडे पेट के भरन में, है रहिमन दुख बाढ......
गजके मख विधि.

नहि रहीम कुछ रूप गुण, नहिं मृगया अनुराग
देशी श्वान जु राखिये, भ्रमत भूखही लाग
गगन चढ़े फिर क्यों गिरें, रहिमन वहरी बाज
फेर आय बन्धन परें, पेट अधम के काज

पेट स्तोत्र

नमामि पेट नमामि पेट पेट परमाराध्य प्रभो
पांडे पानी पांडे बनते, चौबेजी चपरास पहनते
हेत तुम्हारे शुक्ल भिखारी, अद्भुत महिमा बडी तुम्हारी
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
द्वार पाल है बने द्विवेदी, तेल बेचते बठ त्रिवेदी
बने मिश्रजी जमादार है, गाऊँ कैसे गुण अपार हैं
नमामि पेट नमामि पट पेट०
बिडी बनाते हैं साड जी, बडी बेचती हैं बाईजी
पाठक बेचें धोतीजोडा, जो कुछ आप करें सो थोडा
नमामि पेट नामामि पेट पट०
तज हथियार तराजू धारी, क्षत्री बन बैठे पनसारी।
त्याग बेचना जीरा, धनिया बने कान्स्टेबल हैं बनिया।
नमामिपेट नमामि पेट पेट०
दुख दाई चपेट तव खाके, भस रमाके जटा बढाके।
कई शुद्र दुर्व्यसनी पाजी, बन बैठे जग मे बाबा जी।
नमामि पेट नमामि पेट पेट०

उदरपोषण, पेटस्तोत्र सहित

उदर भरनके कारने प्रानी करत इलाज
नाचैं बाचैं रनभिरैं राचैं काज अकाज
दुर भर उदर दरीनके, होत न तन संताप
तो जन जनकी को सहत तरजन गरजन ताप
करी उदर दुइ भरन भय, हर अरधंगी दार
जौन होयतो क्यों रहे, अवलो तनयकुमार
उदर धरन नरतें भलो, राहु उदर तें हीन
कबहू नाहिन होत है, जन जनको आधीन
भरत पेट नट निरत के, उरत न करत उपाय
धरत बरत परयाय अरु, परत बरत लपटाय
हीन धनी आधीन है, सीस नवावत काहि
मान भंग की भूमि यह, पेट दिखावत ताहि
रूखे सूखे उदर को, भरे होत सतुष्ट
राम न लाख करोर के, पाये तुष्ट न दुष्ट
एक एकसों लग रहे, अन्नोदक सबन्ध
चोली दामन ज्यों रच्यो, जगत जंजीरा बन्ध
रहिमन कहत सु पेट सों, क्यों न भयो तू पीठ
रीतै अनरीतै करत, भरे बिगारत दीठ
बड़े पेट के भरन में, है रहिमन दुख बाढ
गजके मुख विधि याहिते, दिये दांत द्वै काढ

तोभी होतीहै तव पूजा, कौन समर्थ आपसा दूजा
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
प्रात काल नींद खुलती जब,मनोवृत्ति जागृत होती तब
याद आपकी ही आजाती, शीघ्र दृष्टि हडी पर जाती
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
जन्मकालमें जीवन भर तक, उषाकालमें अर्द्ध रात्रि तक
लेकर मनमें विविध वासना, करते सब नित तव उपासना
नमामि पेट नमामि पेट पट०
कर न जो नित तव आराधन, महा मूरख पापी वह दुर्जन
शीघ्र अवज्ञा फल पाताहै,कुछ दिन ही में मर जाता है
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
जगमें तव ऐसी है महिमा, ऐसे हैं प्रताप गुण गरिमा
बड को पीपल कहना पडता, सालेको प्रभु कहना पडता
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
कई आप हित ऐसे मरते, चमरों को सलाम नित करते
कई पीटते यश की भेरी,करते नीच द्वार पर फेरी
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
तुम्ही दुखो से भेट कराते, तुम्ही अनेक चपेट खिलाते
जड लेखिनी कहा तक गावे, जग जीवो की कौन चलावे
यक्ष रक्ष सिद्धादिक किन्नर,सुर तक भी रखते हैं तव डर
नमामि पेट नमामि पट पट०

पृथ्वी भरके सकल जीव गण, साहिब बाबू सेठ महाजन
लगा रङ्क से महाराज तक,सभी आपके हैं आराधक
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
सिर पै टोपी तन में कुर्ता , न हो भलेही पग में जूता
आप भरेहैं तब क्या कहना,बहता सदा शान्तिका झरना
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
तव चिन्ता निज मनमे धारे, भूक प्यासकी दशा बिसारे
प्रति दिन प्रति क्षण हेतु तुम्हारे, फिरते हैं सब मारे।मारे
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
किसिको पर धर्मा बनवाया, किसिको लन्दन तक पहुचाया
किसिको बाघम्बर पहनाया, सबको तुमने नाच नचाया
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
लिये तुम्हारे लोग झगडते, पैर पकडते नाक रगडते
एठ छोडते हाथ जोडते, आश फोडते पैर तोडते
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
ज्ञान तभीतक ध्यान तभीतक, ईश्वरका गुण गान तभीतक
रहते भरे आपहैं जबतक, खाली में है खाली बक बक
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
स्थिति अनुसार भक्त गण अर्पित, लेह्य चौष्य पेयादिक चर्वित
नित नैवेद्य ग्रहण करते हो, तोभी खाव खांव करते हो
नमामि पेट नमामि पेट पेट०
घरमें कोई भी मरजावे, रोना धोना भी मचजावे

धन रहीम जल पङ्कको, लघुजिय पियत अघाय
उदधि बडाई कोन है, जगत पयासो जाय
नम्र विटप सब फल भरे, रहे भूमि नियराय
पर उपकारी पुरुप जिमि, नवहि सु सम्पति पाय

चौपाई

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीडा सम नहि अधमाई
पर हित वश जिनके मनमाहीं, तिन्ह कह जग कछु दुर्लभनाहीं

दोहा

धनी कृपण ते होत कब, निरधन उदारहि रीस
वो न दे सके तनिक धन, ये परहित दे सीस

उपकारकी ढाल

निन्दक हैं जो दुष्ट जन, कर उनपर अहसान
टुकडा आगे डालदे, फिर नहि भोके श्वान

उपाय

पूर्ण साधन के बिना कारज सधै न वीर
ओछी डोरी कूपसों, नेक न काढत नीर
जो पहिले कीजै यतन, सो पाछे फल दाय
आगि लगे खोदे कुआ, कैसे आग बुभाय
होत न कारज धडन ते विधियत बिना उपाय
अजन चलत न नेकहू आप भरे बिन भाय

मैंने स्तुति की है तव ऐसी,की होगी न किसीने जैसी-
बस वरदान यही मैं पाऊं तेरा दु,ख कभी न उठाऊं
नमामि पेट नमामि पट पेट ८

दोहा

अरे पेट धिक्कार है तो को बार हजार
गुणि जन को निदरत फिरत, फिर फिर द्वार गवार

उदारता

अति उदारता वडन की, कहलो वरनै कोय
चातक याचै तनक जल, वरस वरै घन तोय,

उपकार

उपकारी उपकार जग, सबसों करत प्रकास
ज्यों कटु मधुरे तरु मलय, मलयज करत सवास
जे उदार ते देत हैं, रीझत जिहि तिहि चाल
गाल बजाये हू करै, गौरी कन्त निहाल
जो सब ही को देत है, दाता कहिये सोय
जल धर वर्षत सम विषम, थल न विचारे कोय
भलेबुरे हू सों करत, उपकारी उपकार
तरुवर छाया करत है, नीच न ऊच विचार
वड़े दीनके दुख सुने, लेत दया उर आन
हरि हाथी सों कब हुती, कहु रहीम पहिचान

धन रहीम जल पकको, लघुजिय पियत अघाय
उदधि वडाई कोन है, जगत पयासो जाय
नम्र विटप सब फल भरे, रहे भूमि तियराय
पर उपकारी पुरुप जिमि, नवहिं सु सम्पति पाय

चौपाई

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पींडा सम नहिं अधमाई
पर हित वश जिनके मनमाहीं, तिन्ह कह जग कछु दुर्लभनाहीं

दोहा

धनी कृपण ते होत कव, निधन उदारहि रीस
वो न दे सके तनिक धन, ये परहित दे सीस

उपकारकी ढाल

निन्दक हैं जो दुष्ट जन, कर उनपर अहसान
टुकडा आगे डालदे, फिर नहिं भौंके श्वान

उपाय

पूरे साधन के बिना,कारज सधै न वीर
ओछी डोरी कूपसो, नेक न काढत नीर
जो पहिले कीजै यतन, सो पाछे फल दाय
आगि लगे खोदे कुआ कैसे आग बुझाय
होत न कारज मडन ते विधिवत बिना उपाय
अजन चलत न नेकहू आप भरे बिन भाय

ताको अरि का कर सकै, जाको जतन उपाय
जरै न तातं रेतसो, जाके पनहे पाय
जोरावर अरि मारिये, बुधि बल किये उपाय
काल यवन को कृष्ण ज्यों, पट मुचकन्द उढाय
छल बल धर्म अधर्म करि, अरि साधिये अभीत
भारत में अर्जुन किसन, कहा करी युध रीत
सुख दिखाय दुख दीजिये, खल सों लरिये नाहि
जो गुड दीने ही मरै, क्यों विष दीजे ताहि
भूठे ही करिये जतन, कारज बिगडे नाहि
कपट पुरुष धन खेत पर, देख मिरग भगजाहि
छोटे अरि को साधिये छोटो करि उपचार
मरै न मूसा सिंह पे, मारे ताहि मजार
जोरावर हू को कियौ, विधि बश करन इलाज
दिपत मही अकुस गजहि, जल निधि तरन जहाज

ऊंचा पद सार हीन है

ऊंचे पद की लालसा, नारायण दे त्याग
फीको फीको सो लगन, उग्र ऊपरी भाग
नामवरी जिन की नहीं, होत न वे बदनाम
लकडी की तलवार पर, कहा किट्ट को काम
बड माया को दोष यह, जब कबहू घट जाय
तौ 'रहीम' मरिबो भलो, दुख सुखजियें बराय'

ऋणी

उत्तमर्ण के सामने, होत ऋणी द्यु ति हीन
जिमि दिनकर के सामने, हिम कर कान्ति मलीन
मिले एक हू छाक में, जाहि न पुष्कल अन्न
पर सो ऋणी न होय तो, रहे सदैव प्रसन्न
लेन हार सनमुख भये, देन हार द्यु ति दीन
राहू केतुके सामने, ज्यों शशि रवि श्री हीन

ऐक्य

जुदे न जैसे राहत है, मिले विरगत सग
काथ पूग चूना पडत, होत लाल मिल रग
बहुतन को न विरोधिये, निवल जान बलवान
मिल भगि जाहि पिपीलका नागहिं नग के मान
बहुत निबल बल मिल करें, करैं जु चाहे सोय
तिनकन की रसरी करी, करी निबन्धन होय।
मिराने ते सुख मिलत है, निहचे मान बचन्न
बने रसोई जो मिले, आग इधन जल अन्न।
दोऊ चाहे मिलन को, तो मिलाप निर्धार
कबहू नाहीं बाजि है, एक हाथ से तार
दुर्बल हू बलवान हो जो गठ जाय समाज
बांटे तृण सिल गुण बने, बाधत हैं गजराज
"मैं मैं तू न ने किया, आपस मे मत भेद

हम को सदा प्रयोग कर: कभी न उपजे खेद
प्रीत रीत सब मे भली, बैर न हित मित गोत
रहिमन याही जनम की, बहुर न संगति होत
एक नहीं कुछ कर सकत, यदपि होय छवि गेह
बिन सनेह गुण हीन है, गुण बिन हीन सनेह

घनाक्षरी

बुन्दन मिलाप ही सो भरिजात वारधीश,
करि को निबन्ध होत तिन के मिलान है।
पड पड पैसा होय जात है खजाना पूर,
वर्ण वर्ण सीखे नर होत विद्वान है।
एक एक जर्रा जुरि गिरि को अकार होत,
मानुष जुरे तो होत दल का विधान है।
राम कवि विविध विचारों से विचार देखा,
एकताई एकै सुख सम्पत की खान है।
बांधे जात वारिधि हिमालय को हिलायो जात,
अग्नि जल वायु नित हुकम उठाते हैं।
ऐरावत नाचे निज पीठ पै चढावें शेर,
महा बलकारी खौफनाक खौफ खाते हैं।
सम्भव होजात जिसे भापै असम्भव जग,
सकल पदार्थ बिन मागे घर आते हैं।
राम कवि देखाहै विचार कर बार बार,
एक एकता से सब काम बन जाते हैं।

ऐश्वर्य मद

धन बाढ़े मन बढ गयो, नाहिन मन घट होय
ज्यो जल सग बाढ़े जलज जल घट घटे न सोय
धन अरु जोवन को गरव कबहू करिये नाहि
देखत ही मिट जात है, ज्यों बादर की छाहिं
धन गुण जोबन रूप मद, दुरै न एको सच
ज्यों हासी खासी बहुर, रोके रहत न रच
देखत है जग जात है, तउ ममता से मेल
जानत है या जगत में, देखत भूलो खेल
थोडा धन चिन्ता हरै, बहुत करै मति भग
उछरे नीर न कुम्भ मे, नद में भरे तरग
रहिमन कबहू बडन को, नहीं गर्व को लेश
भार धरै ससार को, तऊ कहावत शेप

कुण्डलिया

दौलत पाय न कीजिये, सपने में अभिमान
चचल जल दिन चार को, ठान न रहत निदान
ठान न रहत निदान, जियत जग में यश लीजे
मीठे बचन सुनाय, विनय सबहीसों कीजे
कहि गिरधर कवि राय, अरे! ये सब घट तौलत
पाहुन निशदिन चार, रहत सब ही के दौलत

दोहा

कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकात
उहि खाये बौराय जग, इहि पाये बौरात

ओछे की प्रीति

ओछे नर की प्रीति की दीनी रीति बताय,
जैसे छीलर ताल जल, घटत घटत घट जाय
बिन बूझे ही जानिये,बुध मूरख मन माहि
छलकत ओछे नीर घट, पूरे छलकत नाहि
बिनसत बार न लागई, ओछे नर की प्रीति
अम्बर डम्बर साझ के, ज्यो बालू की भीति
ओछे नर के पेट मे, रहै न मोटी बात
जैसे सागर को सलिल गागर मे न समात
ओछे नर के चित्तमे, प्रेम न पूरयो जाय
आध सेर के पात्रमे, कैसे सेर समाय
बचन रचन कापुरुष के, कहे न छिन ठहराय
ज्यो कर पद सुख कछप के, निकस २ दुर जाय

क्षमा शक्ति

नर भूषण सब दिन क्षमा, विक्रम अरि घन घेर
ज्यो तिय भूषण लाज है, निलज सुरति की बेर
होत क्षमा करवाल सों, रिपु को नष्ट घमंड
बढे न कहर भूमि में, पावक पुञ्ज प्रचंड
गारी खाय असीम दे, कर अनिष्ट को इष्ट

खारी जल बादर गहे, बरसावे करि मिष्ट

दुष्ट जनो के कोप पे, कोप करो मत वीर!
आग न आग बुझा सकै, ताहि बुझावत नीर

क्षुद्र अगुवा से हानि

पाय क्षुद्र अगुवा घटे, पिछलगुवों की लार
चलत सुई की गैल गहि, खपैं सूत का तार

कठिन दुःख

चौपाई

यद्यपि जग दारुण दुःख नाना, सबसे कठिन जाति अपमाना

कपटी

ऊपर दरसैं सुमिता सी, अन्तर अन मिल आक
कपटी जन की प्रीति है, खीरा की सी फाक
देखत को सुन्दर लगे, उर में कपट छिपाव
इन्द्रायन के फल सम भीतर कटुक सवाद
मुख पर मीठी बात हैं, मन की रुचि प्रतिकूल
कुम्भ पयो मुख विष भर्यो, ताहि विलोकि न भूल
सन्मुख मुख मीठो वचन, पीठो कारज दूर
दीठो मीत दुराय अस, कचन घट विष पूर
हृदय कपट वरनेप धर, वचन कहैं गहि छोल
अबके लोग मयूर ज्यो, क्यो मिलये मन खोल

मित्र मित्र सों प्रीति कर, हृदय आन मुख आन
जाके मन बिच प्रेम नहिं, दुरे दुराये जान

सोरठा

तुलसी देख सुवेष, भूलें मूढ न चतुर नर
सुन्दर केकी पेष, वचन सुधासम अशन अहि

चौपाई

आगे कह मृदु वचन बनाई, पाछे अनहितमन कुटिलाई
जाकर चित अहि गति सम भाई, अस कुमित्र पर हरे भलाई
मन मलीन तन सुन्दर कैसे, विष रस भरा कनक घट जैसे

घनाक्षरी

मीठी मीठी बात एक पल को न छोड़े साथ
बचनो की चातुरी से नेहमे सने रहे।
पैज कर कहत मरैंगे संग तेरे मीत।
रैन दिन ऐसे बैन इनके घने रहे
लागी जब घात हाथ साफ करि बैठे जाय,
कुज जो थे नैन सोई बाण सों हने रहे।
फलिके कुमीतन की राम कवि देखी रीत,
बातनमें बैरी, मुख अपने बने रहे ।



कृपण निन्दा

खाय न खरचै सूम धन, चोर सबै लैजाय
पीछे ज्यों मधु मक्खिका, हाथ मलै पछताय
वह सम्पति किहि कामकी, जो काहू पै होय
नित्त कमावे कष्ट सहि, बिलसे औरहि कोय
कृपण धनीको जगतमें, दड दियो है राम
भोजन आगे धर मनो, मुखमें दई लगाम
त्यागी कहिये कृपण को, गहत न कौडी साथ
लेत न कछु परलोक हित, रमता रीते हाथ
जेती सम्पति कृपणकी, तेती तू मत जोर
बढत जात ज्यों ज्यों उरज, त्यों त्यों होत कठोर

घनाक्षरी

देखतके वृच्छनमें दीरघ सुभाय मान,
कीर चल्यो चाखिबे को प्रेम जिय जग्यो है।
लाल फल देख कै जटान मडरान लागे,
देखत बटोई बहुतेरो डगमग्यो है।
गग कवि फल फूले भुआ उधिरान लखि,
सबन निराश ह्वै कै निज घर भग्यो है।
ऐसे फल हीन वृच्छ वसुधामें भये यारो,
सेमर विसासी बहुतेरन को ठग्यो है।

कहने और करनेमें अन्तर

कहिवो कछुकरवो कछु, है जगकी विधि दोय
देखन के अरु खान के, और दुरद रद होय
आप कहै नाहीं करै, ताको है ये हेत
आप जाय नहिं सासुरे, औरन को सिख देत
मान करहु जेकर मकहु, कथनी अकथ अपार
कथे न करकछु आवही, करनी कर तब सार
चले न निज उपदेश पर, तासों होय न हेत
बुरे बतावत और को, खुद बैंगन खालेत

चौपाई

पर उपदेश कुशल बहुतेरे,
आचरही ते नर न घनेरे

घनाक्षरी

जीवन सुधार होत बन्धन विनश जाय,
जाहुके कियेसे मन पावत विश्राम है।
जैसा कुछ वेद शास्त्र देत उपदेश तोहि,
जानत है सत्य मन मानत मदाम है।
वचन बनाय निज चातुरी जताय नित्य,
रैन दिन ऐसे ही तू करत कलाम है।
चल्यो पै न आप तिस मार्ग पर एक डग,
विषयोंका दास अति झूठा कवि रामहै।

औरोंको बतावत है भजो भगवानजू का,
भजता है आप पर नित्य काम काम तू।
औरोंको सुनावे तज दीजै लोभ मोह आदि,
हुआ पर आप लोभ मोहका गुलाम तू।
बुरी है पराई निन्दा कह कह जनावे है,
निन्दायुत निन्द्य पर करता कलाम तू।
मानुषीय जन्म है अमोलक, यरान फिर,
खोवत है ताको अरे! झूठे कवि राम तू।

कहनेसे सुनना अच्छा

दूना सुन आधा कहो, सीखो प्रकृति विवेक
कान दिये दो ईशने, वाणी बकसी एक

कही बात पराई

पावत बहुत तलाश नहिं, कर तें छूटी बात
आधी में टूटी गुडी, को जाने कित जात
गूढ यन्त्र जौलों रहे, करैं जु मिलि जन दोय
भई छकानी बात जब, जान जात सब कोय
गूढ मन्त्र गरूजे बिना, कोउ राखि सकै न
कनक पात्र बिन और मे बाघिन दूध रहै न
बात वही अपनी समझ, जो नहिं हुई बयान
तीर न आवत हाथ फिर, जो तजि गयो कमान

कुण्डलिया

साई अपने चित्तकी, भूलि न कहिये कोय
तब लगि मनमें राखिये, जब लगि कारज होय
जब लग कारज होय, भूलि कबहू नहि कहिये
दुर्जन हंसे न कोय, आप सियरे हो रहिये
कहि गिरधर कविराय, बात चतुरनके ताई
करतूती कहिदेत, बात कहिये नहिं साई

सवैया

बोधा किसीको कहा कहिये सो बिथासुन पूर रहै, अरगाइकै
याते भलो मुख मौन धरै, उपचार करै कहु औसर पाइकै
ऐसो न कोऊ मिल्यो कबहू,जो कहै कछु रच दया उर लाइकै
आवतुहै मुखलो बढिकै फिर पीर रहै, या सरीर समायकै

कायर निन्दा

कायर नरको देखि रन, मुख फीको दरसाय
काचो रग ज्यो धूपमे, भटक चटक उडिजाय
कायर मन उडिजात है, सुन कर रनकी बात
बात लगे काफूर ज्यो, थिर फिर पल न रहात

कार्य कसौटी

काम परैही जानिये, जो नर जैसो होय
बिन ताये खोटो खरो गहनो लहै न कोय
सब कोऊ सबको करै, राम जुहार सलाम
हितु अनहितु तब जानिये, जादिन अटके काम

काज पड़े सबही बड़ा बिन कारज सब छोट
पाई हेत भजावते, रुपिया मोहर नोट
रहिमन विपना तू भली, जो थोरे दिन होय
हितु अनहितु या जगतमें, जान परें सब कोय
देत दया निधि तनिक दुख, या हित तुहि अनजान
जान जाय या जगतमें, को अपनो को आन

चौपाई

धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपतकाल परखिये चारी
कसे कनक मणि पारस पाये, पुरुष परखिये समय सुभाये

कुछ नहीं

छप्पय

न कछु क्रिया बिन विप्र, न कछु कायर जिय छत्री
न कछु नीति बिन नृपति, न कछु अन्तर बिन मन्त्री
न कछु बाम बिन धाम न कछु गज बिन गरुआई
न कछु कपटको हेत, न कछु मुख आप बड़ाई
है न कछु दान सन्मान बिन, न कछु सुभोजन जासुबिन
जन सुनो सकल नर हरि कहत, न कछु जन्म हरि भक्ति बिन
ससि बिन सूनी रैन, ज्ञान बिन हिरदै सूनो
कुल सूनो बिन पुत्र, पत्र बिन तरवर सूनो
गज सूनो इक दन्त, ललित बिन सायर सूनो
विप्र सून बिन वेद और दल पहुप विहूनो

हरिनाम भजन बिन सत अरु घटा सून बिन दामिनी
बैताल कहैं विक्रम सुनो, पति बिन सूनी कामिनी

कुत्सित कार्पण्य

विद्या दान न देत है, जो पण्डित पन धार
छागी गल थनमें वृथा, तिनके जन्म असार

कुपुत्र निन्दा

कुल कपूत किहि काम को, जिहिं सुख सोभा नाहिं
ज्यों बकरी के कंठ थन, दूध न जल तिहि माहिं
ज्यों रहीम गति दीपकी, कुल कपूत गति सोय
बारे उजयारे लगे, बढे अंधेरो होय
कुल कपूत नहिं जामियो, रहै बांझ वरु माय
निकस बांसते अग्नि कन, बनको देत जराय
कुल ही नहिं कुल देशको, देत कपूत दुखाय
ज्यों जयचन्द कनौज गति, जानत बुध समुदाय

कुण्डलिया

बेटा बिगरे बापस, करि तिरयन का नेहि
लटापटी होने लगी, मोहि जुदा करि देहि
मोहि जुदा करि देहि, घरी मा माया मेरी
लैहू घर अरु द्वार, करू मैं फजियत तेरी
कहि गिरधर कविराय, सुनो गदहा के लेटा
समय परो है आय, बापसे झगरत बेटा

साईं ऐसे पुत्र ,ते बाझ रहे वरु नारि
बिगरी बेटे बाप से, जाय रहे सुसरारि
जाय रहे सुसरारि, नारिके नाम बिकाने
कुलको धर्म नशाय,और परिवार नशाने
कहि गिरधरि कविराय, मात झंखैं वर ठाईं
अस कुपुत्र नहिं होय, बाझ रहतो वर साईं

आलसरत, शोकातुर लपट, कपटी औरसदा बल हीन
मानस मलिन सदा निद्रातुर,लोभी और अकारण दीन
ऐसे सुतसे क्या फल होगा, हे चतुरान दें वरदान
कभी कपूत किसीको मत दे, चाहे करदे निस्सन्तान
परसे प्रेम द्रोह अपनेसे, करते नित्य दुष्ट गुण गान
गुरु जनकी निन्दा कर हंसते, अपनेको कहते गुणवान
काला अक्षर भैंस बराबर, पर तोभी रखते अभिमान
क्रोधानलमें जलते रहते, यही कपूतोंकी पहचान

कुल वृद्धिसे प्रसन्नता

यो रहीम सुख होत है, बढत देख निज गोत
ज्यों बडरी अखिया निरख,अखियनको सुखहोत

कुलस्वभाव अमिट है

कुल मारग छोडें न कुउ, होइ कितेकी हानि
गज इक मारग दूसरो, चढत महावत आनि

जिन पण्डित विद्या तजहु, धन मूरख अवरेख
कुलजा शील न परहरै, कुलटा भूषित देख
अपनी राह न छाडिये, जो चाहहु कुशलात
बडी प्रबल गेलहु गिरत, और राहमें जात
तुलसी कबहु न त्यागिये, कुल अपने की रीति
लायक ही सो कीजिये, व्याह वैर अरु प्रीति

घनाक्षरी

चातक कुल शोभा नीर पियत न नीचे हैं,
हंस कुल शोभा क्षीर नीर की जुदाई तें।
कंज कुल शोभा है दिनेशसे न मोडै मुख,
शोभा है कुमुद कुल चन्द्र की मिताई तें।
सूर कुल शोभा जैसे रणमें न दीनें पीठ,
दाता कुल शोभा जैसे दान अधिकाई तें।
राम कवि भाषे तैसे सुजन सुजान सुनो,
कवि कुल शोभा शुभ होत कविताई तें।

कुसंगति निन्दा

जिन प्रसंग दूषण लगे, तजिये ताको साथ
मदिरा मानत है जगत, दूध कलाली हाथ
खल जनसों कहिये नहीं, गूढ कबहु करि मेल
यों फैले जग मांहि ज्यों, जल पर बुन्दक तेल

दोहा

दुर्जनके ससर्ग तै, सज्जन लहत क्लेश
ज्यों दशमुख अपराध तैं,बन्धन लह्यो जलेश
अनघर सुघर समाज मे, आय बिगारे रंग
जैसे हौज गुलाब को, बिगरे श्वान प्रसंग
अनमिल सुमिल समाज तैं, होत गये उठ चैन
जैसे तिन परि देत दुख, निकसै निकसै नैन
रसिक सभामे निरस नर, होत होत रस हानि
जैसे भैंसा तालपरि, मलिन करत जल आनि
मिल्यो दुष्ट नाहिन भलो, उपजत मिले अहेत
ज्यों काटो गढि देहमें, अटक खटक दुख देत
बिगर्यो होय कुसंग जिहि, कौन सकै समझाय
लासन बसाये बसन को, कैसे फूल बसाय
दुष्ट निकट बसिये नहीं, बस न कीजिये बात
कदली बेर प्रसग तैं छिदे कटकन पात
करिये बात न तन परस, खल ढिग जैये नाहिं
कटुक नीम तर जात हीं, मुख कडुयें ह्वे जाहि
एक अनीत करे लहे, सगी दुख अति ताहि
भीम कीचक को दियो, मार चिता कै माहि
बसिये तहा विचार क जहां दुष्ट गनि नाहिं
होत न कबहूं भैंवर डर, ज्यों चम्पक बन माहि

आप अकारज आपनो, करत कुबुधके साथ
पाय कुल्हारो आपने, मारत मूरख हाथ
दुष्ट सग बसिये नहीं, दुख उपजत इहि भाय
घसत वासकी अग्नि तें, जरत सबै बनराय
पड कुसगमें पडत है, निर्मल पर भी मार
पावक लोहे से मिलत, पीटत ताहि लुहार
रोकत सग मलीन का, यश सौरभ विस्तार
काली मिरच मिलाय ते, उड न सके घनसार
कुटिलन सग रहीम कहिं, साधू बचते नाहिं
ज्यों नैना सैना करें, उरज उमेठे जाहिं
रहिमन नीचन सग बसि, लगत कलक न काहि
दूध कलालिन हाथ लखि, मद समझहि नर ताहि
सगति सुमत न पावई, परे कुमतके धध
राखो मेल कपूर में, हींग न होय सुगध
सगत दोप लगै सबन, कहे जु साचे बैन
कुटिल वक भ्रू सग मे, कुटिल वक गतिनैन
बहु दुष्टन के कलह में, भूल न दीजे पाय
बाम बासके घिसन तें, सकल बिपन जर जाय

चौपाई

खलउ करैं भल पाय सुसगू, मिटहि न मलिन सुभाव अभगू
उघरहिं अन्त न होय निबाहू कालनेम जिमि रावण राहू

बरु भल वास नरक कर ताता, दुष्ट सग जनि देइ विधाता
को न कुसगति पाय नशाई, रहत न नीच मते चतुराई

घनाक्षरी

लोहे की कुसगति से आग पर मार पड़े
खट्टे की कुसगति मे दूध फट जात है
बास की कुसगति मे जल जात लाखों वृक्ष
काँच की कुसगति मे कूप अट जात हैं
दुष्ट की कुसगति समाज को विनाश करे
क्रूर की कुसंगति से मूर कट जात है
'राम कवि देखा है विचार करि बार बार
नीच की कुसगति से मान घट जात है

चौपाई

धूम अनल सम्भव सुन भाई, तिहि बुझाव घन पदवी पाई
रज मग परी निरादर रहई, सब कर पद प्रहार नित सहई
मरुत उडाय प्रथम तिहि भरई, पुनि नृप नयन किरीटन्ह परई
सुन खगपति अस समुझ प्रसगा, बुध न करहि अधमन कर सगा

घनाक्षरी

जाइये न तहाँ जहाँ सगति कुसगति है
कायर के संग सूर भगि है पै भगि है
फूलन के वास बश फलन की वास होत
कामनी के सग काम जगि है पै जगि है

घर बसे घर बसे घर में वैराग्य कहा
माया मोह ममता में पगि है पै पगि है
काजर की कोठरी में कैसहू सयाने पैठें
काजर की एक रेख लगि है पै लगि है

कोरा भजन

लगन विना कोरा भजन, देत न हरि को संग
एक पक्ष सों गगन में, उड नहि सकत विहंग.

कौन क्या चाहता है

धन चाहत निसदिन अधम, मध्यम धन अरु मान
उत्तम चाहत मान ही, चाहत कछु न महान

गुणमहिमा

मान होत है गुणहिं तें, गुण विन मान न होय
शुक सारो राखैं सबै, काग न राखै कोय
आडम्बर तज कीजिये, गुण महिमा चित चाय
क्षीर रहित गौ नहिं बिकत, आनिये घट बँधाय
थोड़े ही गुण ते कहू, हो प्रसिद्धि जग माहिं
एकहि कर ते गहि करी, करी सहसदस नाहिं
ऊँचे बैठे ना लहैं, गुण विन बडपन कोय
बैठो देवल शिखर पर, वायस गरुड न होय
गुण वारो सपति लहै, लहै न गुण विन कोय
काढ नीर पताल ते जो गुण युत घट होय

गुण सनेह युत होत है, ताही की छवि होत
गुण सनेह के दीप को, जैसे ज्योति उद्योत
करै अनादर गुणिन को, ताहि सभा छवि जाय
गज कपोल शोभा मिटत, ज्यो अलि देत उडाय
जैसो जैसो अधिक गुण, तैसो होय मिलाय
अहि उर,विष गल,अनल चख, ससि सिर शम्भु बसाय
जहा रहे गुण वन्त नर, ताकी शोभा होत
जहा धरे दीपक तहा, निहचै करे उदोत
खाली तज पूरण पुरुष, जिहि सव आदर देत
रीतो कुवा उतारिये, खैंच भरयो घट लेत
पूजनीय गुण ते पुरुष, वर्ष न पूजित होय
यश तिलक किय कृष्ण को, छोट बडे सब कोय
गुण विन पुजे न लोक मे, बड कुलियो की पाति
कोन भजे वसुदेव को, वासदेव की भाति
गुण ते लेत रहीम जन, सलिल कूप ते काढि
कूपहु ते कहु होत है, मन काहू को वाढि

कुण्डलिया

गुण के गाहक सहस नर, विन गुण लहे न कोय
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुने सब कोय
शब्द सुने सब कोय, कोकिला सबै सुहावन
दोऊ को इक रंग, काग सब भये अपावन

कहि गिरधर कविराय, सुनो हे ठाकुर मनके
बिन गुन लहै न कोय, महस नर गाहक गुन के

घनाचरी

दीपक विचार सार केतोही सनेह डार
गुणते विहीन हीन मन्दर लखात है
ऐसे धनु देख गुण रेख बिन कामका न
कोटि शर जोडे एक पट पै न धात है
चग चढ जात है अकाश गुण सयुत हो
राम कवि भापै ये गुण की करामात है
जो पै गुण डारिये तै येते गुण जडता में
मानुप अपार गुण कापै कह्यो जात है
जौलौ कोऊ पारखी सो होन नहिं पाई भेंट
तबही लो तनिक गरीब लो शरीरा हैं
पारखी सों भेंट होत मोल बढे लाखन को
गुनिन के आगर सुबुद्धि के गभीरा है
ठाकर कहत नहिं निन्दो गुणवानन को
देखबे को दीन ये सपूत मूर बीरा है
ईश्वर के अनम ते होत ऐसे मानस जे
मानस सहूर वाले धूर भरे हीरा हैं



गुणहीन को गुण प्यारा नहीं लगता

रस की कथा सुनी न तिहिं, थूर कथा की चाहि
जिन दाखैं चाखीं नहीं, मिष्ट निवौरी ताहि
जो गुण को नहिं जानई, अवगुण ही गुण ताहि
सूर उदित आरो मुँदत, रजनि उलूक उमाहि

गुप्त नाश

फाट रह्यो जीवन वसन, पल पल करो विचार
श्वास श्वास पर खिंचत है, याको इक इक तार

चाहने वाले की दृष्टि से देखो

जो जाको प्यारो लगत, सो तिहिं करत वखान
जैसे विष को विषभखी, मानत अमृत समान
जो जिहि भावे सो भलो, गुण को कछु न विचार
तज गज मुक्ता भीलनी, पहरति गुंजा हार
जाको जासो मन लग्यो, सो तिहि भावे दाय
खारा भस्म विष मुंड युत, शिव तउ शिवा सुहाय
जो जाही सों रच रह्यो, ताहि ताहि सों काम
जैसे कीड़ा आक को, कहा करे वसि आम
जिय चाहै सोई भलो, जियत भलो हिय लागि
प्यासो चाहत नीर को, कहा करे ले आगि

जे चेतन ते क्यों तजै जाको जासों मोह
चुंबक के पाछे सदा, फिरत अचेतन लोह
जिहि चाहे सोई लहै यो सुख होय शरीर
ज्यों प्यासे जिय को मिले, निर्मल शीतल नीर
मनभावन के मिलन बिन, यो जिय होत उदास
ज्यों चकोर की दिन दिशा, चकवा चंद प्रकास
सब कोऊ चाहत भलो, मित्र मित्र की ओर
ज्यों चकई रवि के उदय, शशि के उदय चकोर
प्रेमी प्रीति न छोडही, होत न पन तै हीन
मरे परे हू उदरमे, ज्यो जल चाहत मीन
मीठी कोउ वस्तु नहि, मीठी मन की चाह
अमली मिसिरी छोड के, आफू खात सराह
कत टैं टैं कर करत हौ, चातक को उपचार
भेक कहा तुम जानिहौ, स्वाति बून्द की सार
दीपक दाहक और को, होत रहे तो होय
पै पतंग के अंग को सुखदायक है सोय
जाकी जाको लगन है, मगन ताहि को पाय
काकी काक सुहावनो, रानी राव सुहाय



छलेहुए सबसे डरते हैं

पिसुन छल्यो नर सुजन मो, करत विसास न चूक
जैसे दाधो दूध को, पीवत छाछहि फूक
फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्योपार
जैसे हाँडी काठकी, चढ़ै न दूजी वार
खल वंचित नर सुजन सो, नहिंन विसास करेइ
डहक्यो उडु प्रति विम्बतें मुक्ता हंस न लेइ

छोटोंसे बड़ोंकी शोभा

छोटे नरते रहत हैं, शोभायुत सिरताज
निर्मल राखे चाँदनी, जैसे पायन्दाज
बड़े धनीकी आबरू, निर्धनको अपनाय
मैला दर्पण देखिये, निखरे रारू रमाय
नीच सनेही करि रहैं, ऊंच सुखी दिन रैन
तेरा मलत हैं पगन सों, मस्तक पावत चैन
छोटन सों सोहैं बड़े, कहि रहीम यहि लेख
सहसन को हय वाधियत, लै दमरी की मेख
छोटों ही के मेलसे, मान बड़ो नर पाय
लंका जीती रामने, वानर रीछ सहाय
बड़े करत हैं काम बड़, छोटन को बल पाय
गुरु अञ्जन ज्यों चलत बहु,अति लघु वाल* सहाय

*Valve

जीवित मृतक हैं

चौपाई

कौल, काम बश, कृपण, विमूढा,
अति दरिद्रि, अयशी, अति बूढ़ा।
सदा रोग बश, सतत क्रोधी,
राम विमुख, श्रुति सत बिरोधी।
निजतनु पोषक, निर्दय ग्यानी,
जीवत शव मम चौदह प्रानी।

जबान वसमें रक्खो

छप्पय

जीभ जोग अरु भोग, जीभ सब रोग बढावै
जीभ करै उद्योग, जीभ लै क़ैद करावै
जीभ स्वर्ग लै जाय, जीभ सब नर्क दिखावै
जीभ मिलावै राम, जीभ सब देह धरावै
निज जीभ ओठ एकाम करि' बाट सहारे तोलिये
बैताल कहै विक्रम सुनो, जीभ सँभारे बोलिये।

कुण्डलिया

सदा जागत स्पंदन हरित पारा भर पाय
पवन अनेन हिय जगत ही, पहुर न आतुर आय

बहुर न अंकुर आय, जरै दिन रैन घनेरो
कोटि यतन्हू करहु, दुख नहिं जाय निवेरो
राम सु कवि यों कहत, जाय तन मगहि थारा
अमृत नारि चहि सींच, हिये कर बुझत न द्वारा



जानीहुई बातका क्या पूछना

जाने सो बूझै कहा, आदि अन्त निरतन्त
घर जन्मे पशुके कहो, देखत कोउ [illegible]
परतछनी कै देखिये, कह बरनै [illegible]
कर कंकन को आरसी, को [illegible]
जान बूझ अजगुत करै तासो कहा [illegible]
जागत ही सोवत रहै, तिहि को [illegible]
जान अजान हु हो रहे, तासों [illegible]
ज्योतिमान रवि को कहो, [illegible]

जिसके सयोगसे सुखहै उसके [illegible]

जाहि मिले सुख होत है, ता बि[illegible]
सूर उदय फूले कमल [illegible]
पियक बिछुरे बिरह बस मन [illegible]
धरनि गिरत बिचरी [illegible]

धनि रहीम गति मीन की, जल बिछुरत जिय जाय
जियत कज तजि अनत बसि, कहा मौंरको भाय
जितो हर्ष मिल होत है, बिछुरत शोक समान
कमल खिलत जलसे मिलत, बिछुरत त्यागत प्रान

जिससे सुख पाया हो उसके दुखमें साथ देनाचाहिये

विपति परे सुख पाइये, ता ढिग करिये मौन
नेन सहाई बधिर के, अध सहाई श्रौन
सेवक सोई जानिये, रहे विपतिमें सग
तन छाया ज्यो धूपमें रहे साथ इक रग
सुख दुख सगीजो रहें, सो साचे हितु जान
बाढत जल बाढ़त कमल, घटत तजत है प्रान।

जैसी करनी वैसी भरनी

करे बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय
रोपै बिरवा आक को, आम कहा ते होय
होय बुराई ते बुरो, ये जानो निरधार
ग्याड खनावै और को, ताको कूप तयार
यह कहउन जैसी करै, तैसी पावै लोय
औग्न को आगो करै, आपी कहियत सोय

दोहा

को सुख को दुख देत है, देत कर्म झकझोर
उरझै सुरझै आप ही, ध्वजा पवनके जोर
सब काहूको कहत है, भली बुरी संसार
दुर्योधनकी दुष्टता, विक्रम को उपकार
जैसो कारन होत है, तैसो कारज थाप
कर सरधनु प्रानी हनत, कर माला हरि जाप
नारायण दुर्वचन को, कौन सुने हर्षाय
खोटा सिक्का जाहि दो, तुरत देत लौटाय
जैसा बीज बखेरिये, वैसाही फल पाय
काटे खात बबूल मे, फूल सुगन्ध रिझाय

घनाचरी

आप हित चाहै परहित को निबाहै नर,
दापन दुरावै पर दापन दुराइये।
चाहै जो भलाई भल ठानै मन औरन की,
चाहत कल्यान ध्यान राखत पराइये।
चाहै सुत बन्धु नारिधार मन औरन के,
सुख अभिलास नहीं, जीवों को सताइये।
राम कवि आपै शिख परम हित है तोर,
सन्तत विचार चारु हिये मे धराइये।

छमी सों निबल कहैं दमी सों अदत्ती कहै,
मधुर वचन कहै तासों कहैं दीन है।
दाता को बतावे दभी नेह हीन को गुमानी,
तृष्णा को घटावे तासो कहैं भाग हीन है।
साधु गुण देखै जहां तहांही लगावे दोष,
ऐसो कछु दुर्जनको हृदैई मलीन है।

तत्व ज्ञान

गहत तत्व ज्ञानी पुरुष, बात विचारि विचारि
मथन हार तज छाछको, माखन लेत निकारि
तत्व हीन बकवाद को, सुनते निपट गँवार
लड़कों ही में बिकत है, लकड़ी की तलवार
बिन रस की बकबास जो, सज्जन को न सुहाय
भ्रमर गहत है सरस को, कागज कुसम विहाय

त्याग

हो निर्भय बटमार सो, कस केवल लङ्गोट
कबहू नगी लाशको तकत न कफन खसोट

थोड़े लाभके लिये अति परिश्रम

बिना प्रयोजन भूलिहू,करिये नाहीं ठाट
जैबो नहि जा गावको, ताकी पूछ न बाट
क्यो करिये प्रापति अलप, जामें श्रम अति होय
कौन गरज गिरि खोदकै, चूहा काढ़ै कोय

काम करो मत हो जहा, अल्प लाभ बहु हार
पाई गोजनके लिये, पाव तेल मत जार,



दान महात्म्य

बिना दिये कछु ना मिले, यह समझो सब कोय
देत शिशिरमें पात तरु, सुरभि सु पल्लव होय
खरचत खात न जात धन उत्सव किये अनेक
जात पुण्य पूरन भये, अरु उपजे अविवेक
धन पूरन धनवान पै, बिन दीने न लहात
ज्यो बिन बरसे सघन जल,लिया पियो नहि जात
पुन्य विवेक प्रभाव तें, निहचै लच्छ प्रवास
जौ लौ तेल प्रदीप में, तौ लौं होत प्रकास
दाताके कर कमलकी, उपमा युगता बखान
मुकुल रूप आगे बढत, लौटत सुमन समान
नाद रीझ तन देत मृग, नर धन हेत समेत
ते रहीम पशुते अधिक, रीझे कछू न देत
तब लग है जीवो भलो दीवो परै न धीम
बिन दीवो जीवो जगत, हमहि न रुचै रहीम
दादू दीया है भला दिया करो सब कोय
घरमें धरा न पाइये, जो कर दिया न होय

दृढता

जो न होय दृढचित्त को तहां न रहे सटेकु
ज्यो काचे घट में सलिल नहिं ठेरत छिन एक·

दु.खद है

छप्पय

मरै वैल गरियार, मरे वह अडियल टट्टू,
मरै हठीली नार, मरै वह खसम निखट्टू,
सेवक मरै सु तौन, जौन कछु समय न सुभ्भै
स्वामी मरै सु कौन, जौन सेवा नहिं बुभ्भै
जिजमान सूम मरिजाय तो,कहा सुमिर दुख रोइये
कविगद्द कहैं मरिजाय सो,जाहि सुने सुख सोइये

सवैया

पूत कपूत, कुलच्छनि नारि ,लराक परोस, लजायन सारो
बन्धु कुवुद्धि, पुरोहित लम्पट,चाकर चोर, अतीथ धुतारो
साहिब सूम, अराक तुरग, किसान कठोर, दिवान नकारा
ब्रह्म भने सुन शाह अकब्बर बारहु बाध समुद्र में डारो

दुख से घबराना नहीं चाहिये

कष्ट परे हू साधु जन, नेक न होत मलान
ज्यों ज्यों कचन ताइये, त्यों त्यों निर्मल जान
अधिक दुखी लखि आप ते, दीजै दुख बिसराय
धर्म सुवन वन दुख हर्यो. मुनि नल विपति बताय

रहिमन निज मन की व्यथा, मनही राखो गोय
सुन इठलैं हैं लोग सब, बाट न लै है कोय
यों रहीम दुख सुख सहत, बड़े लोग सहि साति
उवत चन्द्र जिहि भाति सों, अथवत वाही भाति
दुख सहते हैं शांति से, यह मन जान प्रवीन
पत झर झारत पात जों, देत बसत नवीन
दीरघ मास न लेय दुख, सुख साईं मत भूल
दई दई क्त करत है, दई दई सु कबूल
दियो सु सीस चढाय ले, आछी भाति अहेर
जापै चाहत सुख लियो, ताके दुखहि न फेर



दुर्वचन से हानि

रूखे वचन मिलाप में, कहत होत रस भग
बीन बजत ज्यो तार के, टूटे रहत न रग
अमृत ऐसे वचन मे, रहिमन रिस की गास
जैसे मिसरी मे मिली, निरस बास की फास
बुरे वचन नहि बोलिये, यदपि होय हित हेत
जैसे चन्दन धूस तउ, आखन को दुख देत
नीरस वक्ता जी सुनो, बैठ रहो गहि मौन
कन फोडा घडियाल की, ठनक सहैगा कौन

अति कठोर उपदेश सों, दुराचार न जात
क्यों मुख स्वाद सुधार हित, देत नीम के पात
खीरा को मुंह काट कै, मलियत लौन लगाय
रहिमन कड़वे मुखन की, चहिये यही सजाय

दुष्ट निन्दा

ह्वै सहाय हित हू करै, तऊ दुष्ट दुख देत
जैसे पावक पवन को, होत जलन को हेत
हित हू भलो न नीच को, नाहिन भलो अहेत
चाट अपावन तन करै, काट श्वान दुख देत
सहज सँतोप है साधु को, खल दुख देन प्रवीन
मछुवा मारत, जल बसत, कहा बिगारत मीन
कबहु दुष्ट के बदन तैं मधुर न निकसै बात
जैसे कड़वी बेल के, को मीठे फल खात
खल निज दोप न देखई, पर के दोपहि लागि
लखे न पग तर, सब लखैं पर्वत बरती आगि
दया दुष्ट के चित्त में, कबहू उपजति नाहि
हिंसा छोड़े सिंह यह, क्यों आवे मन माहिं
दुष्ट रहै जा ठौर पर, ताको करै बिगार
आगि जहा ही राखिये, जार करै तिहि छार
दुष्टन को हित के बचन, सुन उपजत है कोप
सापहि दूध पियाइये, ज्यों केवल विप ओप

आप न काहू काम के, डार पात फल फूल
औरन को रोकत फिरै, रहिमन पेड़ बबूल
न ये विससिये अति नये, दुर्जन दुसह सुभाव
आटे पर प्रानन हनत, काटे लौं लग पाव
नीच हिये हुलसे रहे, गहे गेंद के पोत
ज्यों ज्यों माथे मारिये, त्यों त्यों ऊंचे होत
पर द्रोही पर दार रत, पर धन पर अपवाद
ते नर पामर पाप मय, देह धरे मनुजाद
सहज सरल रघुपति वचन, कुमति कुटिल कर जान
चले जोंक जिमि वक्र गति, यद्यपि सलिल समान
दुर्जन दर्पण सम सदा, कर देखो हिय गौर
सन्मुख की गति और है, विमुख भये की और
उदासीन अरि मीत हित, सुनत जरहिं खल रीति
जानु पाणि युग जोर कर, विनती करूं सप्रीत
काटे पै कदली फले, कोटि यतन कर सींच
विनय न मान खगेश सुन, डाटहि पै नव नीच

चौपाई

पर हित हानि लाभ जिन केरे, उजरे हर्ष विषाद बसेरे
हरि हर यश राकेश राहु से, पर अकाज भट सहस्र बाहु से
जो पर दोष लखहिं सह साखी, पर हित घृत जिनके मन माखी
तेज कृशानु रोष महि येशा, अघ अवगुण धन धनिक धनेशा

परा काज लगि तनु परहरहीं,जिमि हिमि उपल कृशीदल गरहीं
उदय केतु सम हित सबही के, कुभकर्ण सम सोवत नीके
मैं आपनि दिशि कीन्ह निहोरा,तिन निज ओर न लाउब भोरा
वायस पालैं अति अनुरागा,होय निरामिष कबहु कि कागा
कवि कोविद गावहि अस नीती,खल सें कलह न भल नहिं प्रीती
उदासीन नित रहिये गुसाईं,खल परहरिये श्वान की नाई
अधम जाति में विद्या पाये, भयो यथा अहि दूध पियाये
जिहिते नीच बड़ाई पावा, सो प्रथमहि हठ ताहि नशावा
वैर अकारण सब काहू सों, जो करि हित अनहित ताहू सों
स्वारथ रत परिवार विरोधी, लम्पट कामि लोभि अति क्रोधी
शण इव खल पर बधन करहीं, खाल कढाइ विपत सह मरहीं
पर सम्पदा विनाश नशाहीं,जिमि कृषिहति हिमि उपल विनाहीं
खल बिन स्वारथ पर अपकारी, अहि मूषक सम सुन उरगारी
दुष्ट हृदय जग आरति हेतु, यथा प्रसिद्ध अधम मह केतु

सरस काव्य रचना रचू, खलजन सुनत हसत
जैसें सिंधुर देख मग, श्वान सुभाव भुसत
नीच चग सम जानिये, सुनि लखि तुलसीदास
ढील देत महि गिर परत, खैंचत चढत अकास

घनाक्षरी

आपने बनाइबे को और के बिगारबे को,
सावधान है कैं सीखे द्रोह के हुनर है

भूल गये करुणानिधान श्याम मेरे जान,
जिन को बनायो यह विश्व को वितर है
ठाकुर कहत फंसे सबै मोह माया मध्य,
जानत या जीवन को अजर अमर है
हाय ! इन लोगन को कौनसो उपाय,
जिन्हे लोक को न डर परलोक को न डर है
तज कर कामना जो करत पराये काम,
उत्तम पुरुष ताको कहिके बुलाइये
स्वार्थ परमार्थ जो दोनो ही को चाहत होय,
मध्यम नरो मे तासु गणना कराइये
अपनी ही भलाई जो चाहत हमेश नर,
राम कवि ताको नाम नीच ही गनाइये
विना ही प्रयोजन जो औरों के बिगाडै काम,
सोच थड जी को ताको नाम क्या धराइये

दोहा

गुन तज अवगुन देखि है, दुर्जन दुसह सुभाय
ज्यों तज मधुरे फल शुतर, कीकर कटक खाय
मो समान नहिं जगत में, जहर! करो मत मान
तुम में भी अति विषम है, दुर्जन दुसह जबान
उदधि रहत हर कंट बसि, भयो न इतना मान
काल कूट! जितना भयो, बस कर दुष्ट जबान

अगर दुष्टता जीव की, शिर तज अपयश लेइ
मन तन ग्वाल कटाइ कें, पर तन वन्धन देइ

चौपाई

पर घर घालक लाज न भीरा
बाँझ कि जान प्रसव की पीरा

दोहा

सज्जन गुण लखि दहन है, दुर्जन हृदय नितात
जिमि चोरन की आग में, खटकत रजनी कात

घनाक्षरी

गग के न गौरी के गिरीश के न गोविन्द के,
गोत के न जोत के न जाये राहगीर के
काहू के न सगी रति रगी मैन मानजी के,
जी के अति खोटे खोटे रहैं जम वीर के
ग्वाल कवि कहैं देखो नारि को खसम जानै,
धर्म को पसम जानैं पातक शरीर के
नमक हराम बद काम करै ताजे ताजे,
बाजे बाजे बेसहूर गुरु के न पीर के

दुष्टपर उपकार अपकार और अपकार उपकार है

नीचोंमे उपकारका फल उपजे अपकार
दूध पिलाये सर्प को, उगले विष फुकार
खल दुष्टोंके दाहसे, सरे लोक हित काम
वृश्चिक भस्म कुघावको, तुरत करे आराम

दुष्टोसे सब डरते हैं

बाँके नरतें होत हैं, बन्दनीक सब लोय
नमत दुतीया चन्दकौं, पूरन चन्द न कोय
बसै बुराई जासु तन, ताही को सन्मान
भले भले कहिं छाडिये, खोटे ग्रह जप दान

चौपाई

टेढ जान शंका सबकाहू, वक्र चन्द्रमहि ग्रसन राहू।

दृढ़ता महिमा

जो न होय दृढ चित्तको, तहा न रहै सटेक
ज्यों काचे घटमें सलिल, नहिं ठहरत छिन एक

देह दशा

जैसी परे सो सह सके, कहि रहीम यह देह
धरती ही पर परत सब, शीत घाम अरु मेह

द्यूत निन्दा

जूआ खेले होत है, सुख सम्पति को नास
राज काज नलसे छुट्यो, पाण्डव किय बनवास
रहिमन नहीं सराहिये, लैन दैन की प्रीति
प्रानन बाजी लागही, हार होय कै जीत

कुंडलिया

जड़ है जुआ कुकर्मकी, दुराचार का यार
इसमे हारे हार है, जीते भी है हार
जीते भी है हार, जुआ अपमान करावे
धीर धाम धन धान्य, धरणि धी धर्म नशावे
चोरी जारी खून, तीन तापों की जड है
जुआ नाशका मूल, जुआ पापोंकी जड है.

धन महिमा

गुण प्रगटे अवगुण दुरें, जाके कमला साथ
तियमारी परिहरी तउ, कृष्ण त्रिलोकी नाथ
जो रहीम विधि बड किये, कोतिहि दूषण काढि
चन्द्र दूबरो कूबरो, तउ नखनतें बाढि
धन, धन, धन, है आपको, नमस्कार बहुबार
गुणि जनसे अगुणीन को, कर वावत सत्कार

नम्रता

जो हो मनमें नम्रता, कष्ट न सहे शरीर
तोड सकत नहिं मूलते, कोमल तृणहि समीर
नरकी अरु नल नीरकी, एकै गति करि जोय
जेतो नीचो ह्वै चले, तेतो ऊंचो होय

नियम गुण

नृप अनीति के दोष तें चूकै मन्त्र प्रयोग
करै कुपथता पुरुष को, क्यों नहिं उपजै रोग
होय सो होय हिसाब सों, बिन हिसाब नहिं होय
मरैं बदनतैं अन्न मन, नहीं नाफतैं कोय
नारायण सब सयमी, जियें सदा सुख भोग
उचिताहार बिहार सों, नहीं सतावत रोग
ठीक नियममें काम कर, कबहु न पडे झमेल
गहे सुगमता सरलता, ज्यों लाइनपर रेल

निर्धनकी निर्द्वन्दता

जगमें सम्पति हीन को, संकट नेकहु नाहिं
ज्यों सुर तरु निर्द्वन्द हैं, पतझड ऋतुके माहिं

नीचको उच्चपद शोभा नहीं देता

बडे न लोपैं लाज कुल, लोपैं नीच अधीर
उदधि रहै मरजाद पर, बहै उलट नद नीर

होत अधिक गुन निबल पै उपजत बैर निदान
मृग मृगमद चमरी चमर,लेत दुष्ट हनिप्रान
जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय
प्यादे से फरजी भयो, टेढो टेढो जाय

नेत्र मनकी बात जानते हैं

नयना देत बताय सब, हिय कौ हेत अहेत
जैसे निर्मल आरसी, भली बुरी कहि देत
रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुरव प्रगट करेइ
जाहि निकारो गेहते, कसन भेद कहि देइ
रहिमन मन महाराजके, दृग सों नहीं दिवान
जाहि देख रीझे नयन, मन तिहि हाथ बिकान
कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजजात
भरे मौनमें करत हैं, नैनन ही सब बात
कोटि जतन कीजै तऊ, नागरि नेह दुरै न
कहेदेत चित चीकनी, नई रुखाई नैन
कहि रहीम इक दीपतैं, प्रगट सबै दुति होय
तनु सनेह कैसे दुरै, दृग दीपक जरु दोय
रूप नगर बसि मदन नृप, दृग जासूस लगाय
नेहिन मनको भेद उन, लीनो तुरत मगाय
अपनो से को करत है, कहु दुराव जग माहि
हेत अहेत भली बुरी, नैना नैन बताहिं

प्रेम नगर में दृग बया, नोखे प्रगटे आय
दो मन को करि एक मन, भाव देत ठहराय
नैन कहत नैनहि सुनत, नैन करत निरधार
नैनन ही से चलत है, सब जगको व्यवहार
मनकी बदी विचार करि, लखि अन रीती बात
परके नैन निहार करि, सकुचि नैन नय जात
मैं तो सो कौवा कह्यो, तू जनि इन्हें पत्याय
लगा लगी करि लोनयन, उरमें लाई लाय
झूठे जान न समझे, मन मुख निकसै बैन
याही ते मानहु किये, बातनको विधि नैन
सारी डारी नीलकी, ओट अचूक चुकैन
मो मनमृगकर वर गहे, अहै अहेरी नैन

न्यायी राजाकी प्रजा सुखी रहती है

राजाके बल लोक सब, फिरैं फिरैं सब ओर
ज्यों वनमें छूटे चरैं, बंधे हयके जोर
नृप प्रताप ते देश में रहे दुष्ट नहि कोय
प्रगटे तेज दिनेशको, तहा तिमिर नहिं होय
नीति निपुण राजानि को, अजगुत नहीं सुहाय
करत तपस्या शूद्र को, ज्यों मारयो रघुराय
रहै प्रजा धन यतन सों, जह बाकी तरवार
सो फरा कोउ न लै सकै, जहा कटीली डार

रहिमन राज सराहिये, शशि सम शीतल होय
कहा बापुरो भानु है, तप्यो तरैयन खोय

पछताते हैं

छप्पय

सठन सनेह जु करै, मान वचहि सुलच्छहिं
पिय वियोग सुखचहै सॉकरै तजै स्वामि कहँ
भनि वन्धहि पर रमनि, खेल दुर्जन संग खेलहि
नृपति मित्रकर गनहिं, सर्प मुख उगलि मेलहि
चुक हित समै नरहरि निरख, जड आगे विस्तरहि गुन
पछितातहिं सुते नर भगति बिन, दौलत दलपत ग्यान सुन

पर घर बास निन्दा

पर घर कबहु न जाइये, गये घटत है जोत
रवि मडलमें जात शशि, चीण कला छवि होत
ठौर छुटे ते मीतहू, है अमीत ततरात
रविजल उखरे कमल को, जारत गारत जात
को न जाय पर गेह में, होत प्रतिष्ठा हीन
पैठ भानुके भवनमें, भयो मयक मलीन
कौन बडाई जलदि मिल, गग नाम भो धीम
किहि की प्रभुता नहिं घटी, पर घर गये रहीम

माह मास लहि टेसुआ, मीन परे थरा भौर
त्यों रहीम जग जानिये, छुटे आपने ठौर
को न छुटे निज ठौरके, हीन प्रतिष्ठा होय
निकस दात मुखसे भयो हाड अपावन सोय
पर घर जा कहि राम कवि, को न करे घट काम
पाडव सुत सेवक भये, बसि बिराटके धाम

पद भ्रष्ट निन्दा

ताकी सम्मति को सुने जो पद भ्रष्ट प्रधान
अन चाल्ह सिका कहा, पावत है सम्मान

पराधीन निन्दा स्वाधीन प्रशंसा

जो प्रानी पर वश परयो, सो दुख सहत अपार
जूथ बिछोही गज सहै, बन्धन अकुश मार
मन प्रसन्न तन चैन जँह, स्वेच्छा चार विहार
मग मृगी मृग सुख सबै, बन बसि तृन आहार
पराधीनता दुख महा, सुख जग में स्वाधीन
सुखी रमत शुक बन विषे, कनक पींजरे दीन
पराधीन नहि कीजिये, काहू को भगवान
जो कीजै मत दीजिये, ताको कविता ज्ञान

चौपाई

कत विधि सिरजि नारि जग माहीं
पराधीन सुपने सुख नाहीं

प्रकृति मिलने से मन मिलता है

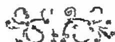
प्रकृति मिले मन मिलत है, अन मिल तैं न मिलाय
दूध दही ते जमत है, काजी ते फट जाय
एक वस्तु गुन होत है, भिन्न प्रकृति के भाय
मेंदा एक को पित्त कर, करत एक को वाय
वाके सीधे को मिलत, नियहै नही निदान
गुन ग्राही तौऊ तजत, जैसे बान कमान
पडित पडित को मिलत, संशय मिटत न बैर
मिलैं दीप दुहु दुहुन को, होत अधेर निवेर
सुजन सुजन के दरस ते, पावत जिय सतोप
लहत कन्ध्र के वत्स ज्यों, सोम दृष्टि तैं पोप
कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को सग
वे डोलत रस आपने, उनके फारत अग
धीरज रहे न धीर को, हो यदि मेल कुमेल
पानी दीपक में पडे, चिड़ चिडात है तेल
भेद भरे नेतान सों, होत न देश सुधार
कबहु न निकले मधुर सुर, जो नहिं मिले सितार
सरल सरल सों होय हित, नाहि सरल अरु वक
ज्यों सर सूधहि कुटिल धनु, डारै दूर निसक
सूरको सूर गुणीको गुणी लवराके ढिगै लवरा सुख पावे
लम्पटको नित लम्पट भावत पडितके मन पडित भावे

पाप परिणाम

वृद्धि न ह्वै है पाप तैं, वृद्धि धर्म तैं धार
सुन्यो न देख्यो सिंह के, मृग को सो परिवार

पंडित के सामने मूर्ख का आदर नही होता

मूढ तहा ही मानिये, जहा न पण्डित होय
दीपक की रवि के उदय, बात न पूछे कोय
चतुर सभा मे क्रूर नर, सोभा पावत नाहि
जैसे बक सोहत नहीं, हंस मडली माहि
जहा चतुर नाहिन तहा, मूढन सो व्यवहार
बर पीपर बिन हो रहे, ज्यो अरड अधिकार
उत्तम को अपमान अरु, जहा नीच को मान
कहा भयो जो हस की, निन्दा काग बखान
तेजस्वी के सामने, बने दुष्ट जन मूक
जब तक भासत भासकर, बोलत नहीं उलूक
पडित जन के सामने, मूढ न ठहरन पाहि
सुनत शेर रव स्यार दल, भगत तुरत चल जाहि
जह गुणि जन तह मूढ नर, काहू को न सुहात
कनक सामने काच की, कोउ न पूछत बात



पात्र भेदसे गुण भेद

पलट जात हैं वस्तु के, गुण भाजन अनुसार
सुधा भयो विष राहु को, गरल शम्भु शृंगार

पात्रता

करत न कबहु कुपात्र को, सदुपदेश कल्यान
सुनने में आया नहीं, जोंक लगी पाषान
करत न चचल चित सदा, सदुपदेश को मान
सुमन माल कपि कंठ में, छिन भर की महमान
दान दीन को दीजिये, मिटे दरिद्र की पीर
औषधि ताको चाहिये, जाके रोग शरीर
जो गरीब सो हित करें, धन रहीम वे लोग
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई योग
दीन सबन को लखत है, दीनहि लखै न कोय
जो रहीम दीनहि लखै, दीन बन्धु सम होय
बहत नदी नद जल उदधि, कौन बड़ाई ताय
धन बादर जल होत जो फल फूलन सुखदाय
स्वारथ रत संसार नर, देत लेत करि भेय
दीन हीन को कौन जग, दीनबन्धु बिन देय
अधिकारी को दीजिये मिटै दरद दुख भय
सुता अघानी त्यागि करि, भूखी बहु को देय

कामीको कामी विलोक सुखी अरु ज्वारीको ज्वारीमिले हरषावे
जाकोहै जैसा सुभाव सदा तिहिके अनुसारहि आनन्द पावे

प्रतिष्ठाकी रक्षा करो

फिर जोड़े जुड़ती नहीं, भई प्रतिष्टा भग
फटे दूधके छीछड़े, बने न पय के अंग
जाय भलेही माल धन, इज्जत लेहु बचाय
बहुर हाथ नहिं आवही, जो कपूर उड़ जाय
सम्पति भरम गवाय कै, हाथ रहत कछु नाहि
ज्यों रहीम शशि रहत है, दिवस अकासहि माहिं
रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरे, मोती मानस चून•

सोरठा

रहिमन मोहिं न सुहाय, अमी पियावत मान बिन
जो बिष देय बुलाय, प्रेम सहित मरिबो भलो•

कुण्डलिया

पानी बाढो नावमें, घर में बाढो दाम
दोनो हाथ उलीचिये, यही सयानो काम
यही सयानो काम, रामको सुमिरन कीजै
पर स्वारथ के हेत, सीस आगे धर दीजै
कहि गिरधर कविराय, बडन की याहीं बानी
चलिये चाल सुचाल, राखिये अपनो पानी

प्रेम प्रचार

प्रेम निबाहन कठिन है, समुझ कीजिये कोय
भाग भखन है सुगम पै, लहर कठिन ही होय
जैसो बन्धन प्रेमको तैसो बन्ध न और
काठहि भेदै, कमल को, छेद न निकरै भौर
नवल नेह आनन्द उमग, दुरै न मुख चख ओर
तैसो जान्यो जात है, ज्यों सुगधको चोर
प्रेम छकै मनको हटक, रख न सकै कुल लाज
कमल नालके तन्तु सों, को बाँधे गजराज
बात प्रेमकी राखिये, अपने ही मन माहिं
जैसे छाया कूप की, बाहर निकसै नाहिं
प्रेम पगन जासों भई, सुख दुख ताके सग
बसत कमल अलि बासवश, सकमल भखत मतग
होत चाह कब होत है, प्रेम सु सज्जन संग
पास दिये बिन पास पर, चढै न गहरो रग
प्रेम नेम के पन्थको, है कछु अद्भुत रूप
पिय हिय लागै लगत ज्यो शरद जौन्ह सी धूप
कबहू प्रीति न जोरिये, जोर तोरिये नाहिं
ज्यों तोरे जोरे बहुर, गाठ परे गुण माहि
अन्तर तनक न राखिये, जहा प्रीति व्यवहार
उर सों उर लागै न तह, जहा रहत है हार

अगम पन्थ है प्रेमका, जह ठकुराई नाहिं
गोपिनके पीछे फिरे, त्रिभुवन पति वन माहि
ज्यों ज्यों छुटे अयान पन, त्यों त्यो प्रेम प्रकास
जैसे कैरी आमकी, पकरत पकै मिठास
रहिमन रिस महि तजत नहि, बडे प्रीतिकी पौर
मुकन मारत आवई, नींद विचारी दौर
रहिमन मन महराजके, दृग सो नहीं दिवान
जाय देख रीझे नयन, मन तिहि हाथ बिकान
गिरतै ऊंचे रसिक मन, बूडे जहा हजार
वहै सदा पशु नरनको, प्रेम पयोधि पगार
अद्भुत गति है प्रेमकी, बैनन कही न जाय
दरस भूख लागे दृगन, भूखहि देत भगाय
अद्भुत गति है प्रेमकी, लखो सनेही आय
जुरै कहू टूटे कहू, कहू गाठ पड़जाय
देखो करनी कमल की, जलसो कीनो हेत
प्राण तज्यो प्रेम न तज्यो, सूख्यो सरहि समेत
भौंरा भोगी बन भ्रमे, मोद न माने ताप
सब कुसमन मिल रस करै, कमल बँधाये आप
सुन परमित प्रिय प्रेमकी, चातक चितवत पारि
घन आशा सब दुख सहै, अन्त न याचै वारि

दीपक पीर न जानई, पावक परत पतंग
तनु तो तिहि ज्वाला जरयो, चित न भयो रस भंग
प्रीत परेवाकी गनो, चाहत चढन अकास
तह चढतीय जु देखिय, परत छाड उर स्वास
सुमिर सनेह कुरंग को, पवन न रान्यो राग
धर न सकत पग पछमनो, सर सन्मुख उर लाग
सब रस को रस प्रेम है, विषई खेलै सार
तन मन धन योवन खिसै, तऊ न माने हार

सोरठा

जल पय सरस विकाय, देख प्रीति की रीति भल
विलग होय रस जाय, कपट खटाई परत हीं

चौपाई

जलद जन्म भरि सुरत बिमारे, याचत जल पवि पाहन डारे
चातक रटनि घट घटि जाई, बढे प्रेम सब भांति भलाई
कनक हि बान चढे जिमि दाहे, तिमि प्रीतम पर प्रीति निवाहे
जग यश भाजन चातक मीना, नेम प्रेम निज निपुण नवीना
मीन पतंगहि गुरु करे, जो चाहत किय नेह
त्यागन संगम होत हीं, परहर अपनो देह

घनाक्षरी

कै तो प्रेम पन्थ दिग पद न टिकावे कोऊ
जो पै पाव डारे फिर हारे औ निहारे ना

'राम' कवि काहू विधि काहू को न दीजे बैन
मुख मे निकारे जो पै ताहि इनकारै ना
कै तो काहू कार्य्य को न कीजिये आरम कभी
आनि कर दीजे जो पै अंत बिन छारै ना
कोई कछु मांगै मन राखै अभिलाखै जोइ
दीजे प्रणपाल बकवास को विचारै ना
पारस सराहिये क्यों जहा द्वैत भाव रहे,
लोह स्वर्ण कै ही निज तुल्यता दुराय है
स्वर्ण गिरि क्योंकर सराहिवे के योग्य कहो,
'राम' कवि जहा तरु तरु ही रहाय है
सत्य ही सराहिबे के योग्य दूध प्रीत जान,
जल अपनाय निज भाव से मिलाय है
अथवा है मलैगिरि शोभा मूल जग माहि,
जहाहु को तरु तरु चन्दन ह्वै जाय है
यदपि किसान नर आगम मनावत है,
स्वागत करत भेक विविध विधान सो
ऊच स्वर मोर गुण गावत हैं चाव भर,
झूम झूम झींगुर सु नाचैं बहु तान सों
याध के समाज सज साज अति मोद मान,
उड़ बग जात पाय वकुले सन्मान सों

'राम' हैं वलाहक के चाहक अनेक पर,
चातक सी चाहना न होगी किसी आन सों

पद

प्रीति तौ मरनऊ न विचारै

प्रीति पतग जोति पावक ज्यो, जरत न आप-सँभारै
प्रीति कुरग नाद स्वर मोहित, बधिक निकट ह्वै मारै
प्रीति परेवा उडत गगन तैं, गिरत न आप सँभारै
सावन मास पपीहा बोलत, पिउ पिउ करि जो पुकारै
'सूरदास' प्रभु दरशन कारन, ऐसी भाँति उचारै

घनाक्षरी

चाहिये जरूर इनसानियत मानस को,
नौवत बजे पै फेर भेरि बजनो कहा
जाति औ अजाति कहा हिन्दू औ मुसलमान,
जाते कियो नेह फेर ताते भजनो कहा
'ग्वाल' कवि जाके लिये सीस पै बुराई लई,
लाजहू गमाई कहो फेर लजनो कहा
यातो रग काहू के न रँगिये सुजन प्यारे,
रँगे तो रगेई रहे फेर तजनो कहा

सवैया

एकहि सों चित चाहिये अन्तलों वीच दगा को परै नहिं टाको
मानिक सो चित बेच कै जू अब फेर कहा परखावनो ताको

'ठाकुर' काम नही सब कोइक लासन मे परवीन है जाको
प्रीति कहा करिबे मे लगै करि के फिर ओड निबाहनो वाको

घनाक्षरी

गहियो आकाश पुनि लैबो अथाह थाह,
अति विकराल काल व्यालहि खिलाइयो
शैल शमशेर धार साहियो प्रहार थान,
गज मृगराज लै हथेरिन लराइयो
गिरि ते गिरन पथ आगि मे जरन और
काशी करवत तन बर्फ लो गराइयो
पीबो विष विषम 'कबूल' कवि नागरजू,
कठिन कठोर एक नेह को निबाहिबो

सवैया

अति खीन मृनाल के तारहु ते
तिहि ऊपर पाव दे आवनो है
सुइ बेह ते द्वार सकी न तहा
परतीति को टाको लगावनो है
कवि 'बोधा' अनी घनी नेजहु ते
चढ़ि तापै न चित्त डरावनो है
यह प्रेम को पन्थ कराल महा
तरवार की धार पै धावनो है

लोक की लाज औ शोक प्रलोक को
वारिये प्रीति के ऊपर दोऊ
गात्र को गेह को देह का नातो
सनेह में हा तो करै पुनि सोऊ
'बोधा' सुनीति नियाह करै
धर ऊपर जाके नहीं सिर होऊ
लोक की भीत डरात जो मीत
तो प्रीति के पैंडे परे जिन कोऊ

दोहा

चित दै भजै चकोर ज्यों, तीजे भजै न भूख
चिनगी चुगै अँगार की, पियै कि चन्द मयूख

फूट निन्दा

अरि के सग कुटम्बि लखि, जिय उपजत है त्रास
बैंटा लगै कुठार को, तब वन राय विनास
अपनो ही के द्रोह तैं, कटते हैं सब कोय
लोहा कटे न काहु ते, जो छैनी नहिं होय
तहा नहीं है भय जहा, अपनी जाति न पास
काठ बिना न कुठार कँहु, तरु को करत विनास



घनाक्षरी

फूट गए हीरा की बिकानो कनी हाट हाट,
काहू घाट मोल काहू बाढ मोल को लयो
टूट गई लंका फूट मिली है विभीषण को,
रावण समेत बस आसमान को गयो
कहै कवि 'गंग' दुरयोधन से छत्र धारी,
तनक में फूट ते गुमान वाको ने गयो
फूटे ते, नरद उठ जात बाजी चौसर की,
आपस के फूटे कहो कौन को भलो भयो
दूध फट जाने घट जाने है अपार रस,
अंग कट जाये तन लहत हरास है
रतन अमोल के फटे ते घट जावे द्युति,
दन्त के कटे त फील फीको अति भास है
नरद फटे ते बाजी हर जात चौसर की,
मेघों के फटे ते होत जरा की न आस है
'राम' कवि भाषै सिरु कान दै विचारो,
मीतो आपस के फूटे ते भलाई को विनास है
फूटहि ने लंका को विनाश कियो राम कर,
फूटहि ने भारत मे मारे मरदाने हैं
फूट ने चौहान को फंसायो फंद बैरियों के,
फूटहि ने भाई हाथ भाई मरवाने है

'राम' कवि फूट फटकार के है योग्य सदा,
फूट फल खाये सुख पाये कहो काने हैं
फूटे भाग्य वाले गे रे फूट बोन वाले,
नेक कहिये विचार जो सताने नहिं ताने हैं



कुण्डलिया

साईं ये न विरोधिये, छोट बड़े सब भाय
ऐसे भारी वृक्ष को, कुल्हरी देत गिराय
कुल्हरी देत गिराय, मार के जमी गिराई
टूक टूक कै काट, समुद में देत बहाई
कहि 'गिरधर' कविराय, फूट जिहि के घर आई
हरिनाकस्यप कस, गये वलि रावण साईं
साईं बेटा बाप स, बिगरे भयो अकाज
हरनाकस्यप कस को, गयो दुहुन को राज
गयो दुहुन को राज, बाप बेटा में बिगरी
दुशमन दावागीर, हँसे महि मण्डल नगरी
कहि 'गिरधर' कविराय, युगन याही चल आई
पिता पुत्र के बैर, नफा कहु कौने साईं.
साईं अपने भ्रात को, कबौं न दीजे त्रास
पलक दूर नहिं कीजिये, सदा राखिये पास

सदा गखिये पास, त्रास कबहू नहिं दीजै
त्रास दियो लकेश, ताहि की गति सुनि लीजै
कहि 'गिरधर' कविराय, राम से मिलयो जाई
पाय विभीषण राज, लङ्कपति बाज्यो साई

पद

जगत में घर की फूट बुरी
घर की फूटहि सों बिनशाई सुवरण लंक पुरी
फूटहि सों सब कौरव नाशे भारत युद्ध भयो
जाको घाटो या भारत में अबलौं नाहि पुज्यो
फूटहि सों जयचन्द बुलायो यवनन भारत धाम
जाको फल अबलौं भोगत सब आरज होय गुलाम
फूटहि सों नवनन्द विनाशे गयो मगधको राज
चन्द्रगुप्तको नाशन चाह्यो आप नशे सहसाज
जो जगमें धन मान और बल आपन राखन होय
तो अपने घर में भूलेहु फूट करो जनि कोय

सवैया

रावण ने कर बन्धु विरोध लख्यो निज सम्पति जान गंवाई
बालि ने व्यर्थ सुकंठ को कष्ट दे खोई स्वजीवन राजबड़ाई
भूल से भी न कभी करिये निज भाइयों से इस हेतु लड़ाई
काम हैं आते विपत्तिके काल मे गाढ़ेसा कंचन पीठका भाई

बड़े बड़ाईकी रक्षा करते हैं

बडे जिती लघुता करैं, तिती बड़ाई पाय
काम करैं सब जगतके ताते त्रिभुवनराय
छिमा बडनको होत है, छोटनको उत्पात
का रहीम हरिको घट्यो, जो भृगु मारी लात

पद

सतवादी हरिश्चन्द्र से राजा, नीच घर नीर भरे
पाच पाडु और कुन्ती द्रोपदि, हाड हिमालय गरे
यज्ञ किया बलि लेन इन्द्रासन, सो पाताल धरे
मीरा को प्रभु गिरिधर नागर, विषसे अमृत करे

बड़ोंकी बात मानी जातीहै

जो भाषैं सोई सही, बडे पुरुष मुख आन
है अनग ताको कहैं, महा रूपकी खान
अशुभ करत जो होत शुभ, सज्जन वचन अनूप
श्रवण पिता दिय दशरथहि, शाप भयो वर रूप
यही बात सब ही कही, राजा करै सो न्याव
ज्यों चौपरके खेलमें पासे पडै सो दाव
बडे अनीति करैं तऊ, बुरो कहै नहिं कोय
बालि हत्यो अपराध बिन ताहि भजैं सब लोय
हार बडेकी जीत है, निबल न मानैं तास
विमुख होय हरि ज्यों कियो, कालयवनको नास

बड़े जु चाहैं सो करैं, कर न मतो उर धारि
हरि गिरि तारे जलधि पर, करी सिलातें नारि
द्वै ही गति हैं बड़न की, कुसम मालती भाय
कै सब के सिर पर रहैं कै बन माहिं विलास
हित अनहित गुरुजन वचन, लोपत कबहु न धीर
राज काज को छोड़ के, चले विपन रघुबीर
कहैं यहै श्रुति समृती हु, सबै सयाने लोग
तीन दबावत निकट ही, राजा पातक रोग

बड़ोंके दोपको कोई नहीं कहता

को कहि सकै बडेन सों, लखी बड़ी ये भूल
दीने दई गुलाब की, इन डारन ये फूल

चौपाई

जो अहि-सेज शयन हरि कर हीं,
बुध कछु तिन कहु दोप न धर हीं।
भानु कृशानु सर्व रस खाही,
तिन कहँ मन्द कहत कोउ नाही।
शुभ अरु अशुभ सलिल सब बहहीं,
सुर सरि कोउ न अपावन कहहीं।
समरथ कहँ नहिं दोप गुसाईं,
रवि पावक सुरसरि की नाईं।

वडोंके पास सबकी गुज़र होती है

भले बुरे छोटे वडे, रहे बडन पै आय
मकर असुर सुरगिरि अनल दधिमधि सरलवसाय
गहिये ओट वडेन की, जहा मिटै दुख द्वन्द
उदधि मरन मैनाक को, कछु कर सक्यो न इन्द्र
भले बुरे निबहे सबै, महत पुरुष के संग
चन्द सर्पजल अगनि विप, बसत शम्भुके अंग
नीति अनीति बडे सहैं, रिस भरि देत न गारि
भृगु उरदीनी लात की, कीनी हरि मनु हारि

कुण्डलिया

रहिये लट पट काट दिन, वरु घामें मा सोय
छाँह न वाकी बैठिये जो तरु पतरो होय
जो तरु पतरो होय, एक दिन धोखा दै है
जादिन बहै बयारि, टूट तब जडसे जै है
कहि गिरधर कविराय, छाँह मोटे की गहिये
पत्ते सब झडजाँय, तऊ छायामें रहिये

बनत देर लगतीहै बिगडत शीघ्र है

सुधरी बिगर बेगही, बिगरी फिर सुधरैन
दूध फटे काजी परे, सो फिर दूध बनैन
भली करत लागत बिलम, बिलम न बुरे बिचार
भवन बनावत दिन लगै, ढाहत लगत न बार

बिगरन वारी वस्तु कौं, कहो सुधारै कौन
डारे पय औटायकैं, मिसरी भोरे नौन
बिगरी बात बनै नहीं, लाख करो किन कोय
रहिमन बिगरे दूध के, मथे न माखन होय
जिहि जोडत तुमको लगी, बहुत देर हे राम !
टूट गई इक बचन तें अब वह प्रीति तमाम

बलवान महिमा

जोरावर की होतहै, सबके सिर पर राह
हरि रुकमणि हरि लै गयो, देखत रहे सिपाह
सिहनको अभिषेक कब, कीन्हो विप्र समाज
निज भुज बलके तेज तें, भये मृगनके राज
बहु छुद्रनके मिलन तें हानि बली की नाहि
जूथ जंबूकनतें नहीं, केहरि कहु नसि जाहिं

बातासे भले बुरेकी पहचान

भले बुरे सब एकसे, जब लौं बोलत नाहि
जान पडत हैं काक पिक, ऋतु बसत के माहि
मधुर बचन से जात मिट, उत्तम जन अभिमान
तनिक शीत जलसे मिटै, जैसे दूध उफान
बात कहन की रीतिमें, है अन्तर अधिकाय
एक बचन से रिस बढ़ै, एक बचन ते जाय

कहै रसीली बात तो, बिगडी लेत सुधार
सरस लौनकी दालमे, ज्यों नीबू रस डार
कर बिगडी सुधरे बचहि, जैसे बनिक विशेष
हींग मिरच जीरो कहैं, 'हग' 'मर' 'जर' लिसलेष
समझै श्रन समझै कछुक, कहिये मीठीं बात
बालक के सुन सुन बचन, जैसे श्रवण सुहात
भले भले ही कहत है, पैन कहत हैं दोष
सूरदास कहि अन्ध को, उपजावत हैं तोष
भले बुरे को जानिये, जान बचनके बन्ध
कहै अन्धको सूर इक, कहै अधको अध
पाय प्रकृति वश कीजिये, करि बुधि बचन विवेक
लष्ट पुष्ट सो एक को, यष्ट मुष्ट सो एक
करिये सभा सुहावतो, मुख तैं बचन प्रकाश
विन समझें ममपालको, बचनन भयो विनाश
परुष बचन तैं रोष हित, कोमल बचन समाज
रजक पछार्‍यो कूबरी, रास लई ब्रज राज
हसन के ढिग बैठ करि, लीजे मौन सहाय
बक,बक, बक मत कीजिये, जाती जानी जाय

बिपत कालमें कोई साथ नहीं देता

यदपि आपनो होय तऊ, दुखमें करत न पीर
ज्यों दुखती श्रँगुरी निकट, दूसरि ताहि न पीर

दुरदिन परे रहीम कहि, भूलत सब पहिचान
मोच नहीं वित हानिको, जो न होय हित हानि
निकट न लागत मीत हितु, विपत कालके माहिं
होत अंधेरो तजत है, संगति अपनी छाहिं

सवैया

वारिध तातहुसे विधिसे सुत सोम सुधा सु,सहोदर दोऊ
रमा रमा तिनकी भगिनी मघुवा मधु सूदनसे बहिनोऊ
तुच्छ तुषार इतौ परिवार भयो सरमथ्य सहाय न कोऊ
सूख सरोज रह्यो जल हीन नहीं दुरमें किहिकोकोउ होऊ

बुरे लगते हैं

सम्पति बीते विलसवो, सुरुको चाहे कोय
रुख उरकरे फूल फल, कैधौं कैसे होय
पिछनेपन का रति कथा, जल सूखे कासार
ज्ञान भये समाग सुरत, वित्त गये परिवार
दुर्जन सगति जगत रति, पर दुख दायक बात
मान विना धन कोटिहु, सज्जनको न सुहात

भक्तका उपालंभ

थोरेई गुण रीझते, बिसराई वह बानि
तुम हू कान्ह मनो भये, आज कालके दानि
रचको टेरत दीन रत, होत न श्याम सहाय
तुम हू लागी जगत गुरु, जगनायक जगवाय

ज्यों है त्यों हौहुगो, हो हरि अपनी चाल
हठ न करो अति कठिन है, मो तरिवो गोपाल

भक्ति उपदेश

जप माला छापा तिलक, सरै न एको काम
मन काचे नाचे वृथा, साँचे राचे राम
तौ लग या मन सदनमें, हरि आवें किहि बाट
निपट विकट जब लों जुटै, खुलैं न कपट कपाट
अपने अपने मत लगे, यादि मचावत शोर
ज्यों त्यों सेवो सबहि को, एकै नन्द किशोर

सोरठा

मैं समझो निरधार, यह जग काचो काच सो
एकै रूप अपार, प्रतिबिम्बित लखिये जहां

भक्ति महिमा

जो नारायण भक्त है, नारायण मतिमन्द
तो मरसे मो भांति सो, गुण धर दोहा छन्द
रहिमन मनहि लगाय कै, देख लेहु किन कोय
नरको वश करिवो कहा, नारायण वश होय
जिहि रहीम चित आपनो, कीनो चतुर चकोर
निशिवासर लागो रहै, कृष्ण चन्द्र की ओर
सतत सम्पति जान कै, सबको सब कुछ देइ
दीन बन्धु बिन दीन की, को रहीम सुधिलेइ

समय दशा कुल देख कै, लोग करत सन्मान
रहिमन दीन अनाथ को, तुम बिन का भगवान
धूर धरत नित सीसपर, कहु रहीम किहि काज
जिहि रज मुनि-पत्नी तरी, सो ढूढत गज राज
इहि शरनागत राम की, भवसागरकी नाव
रहिमन जगत उधार कर, और न कछु उपाव
जिहि रहिमन तन मन दियो, कियो हिये बिच मौन
तासो दुख सुख कहनको, रही बात अब कौन

घनाक्षरी

पासनि सों बाध के अगाध जल बोर राखे,
तीर तरवारन मो मारि मारि हारे हैं।
गिरि ते गिरायदिये डरपे न नेक तन,
भूधर से मतवारे हाथी तर डारे हैं।
फेरे सिर आरा लै अगिनि मांझ जोर पुनि,
पूछ मींड शातन लगाये नाग कारे हैं।
पूछे ते बतायो खम तहई दिखायो रूप,
प्रगट अनूपदास वानि ही से प्यारे हैं।

दोहा

कोऊ कोटिक संग्रहो, कोऊ लाख हजार
मो सम्पति यदुपति सदा बिपति विदारन हार
या अनुरागी चित्तकी, गति समझै नहिं कोय
ज्यो ज्यो बूडै श्याम रंग, त्यों त्यों उज्जल होय

जो अनेक अवगुण भरी, चाहै याहि बलाय,
मो पति सम्पति हू बिना, यदुपति राखै जाय

भय स्थानसे बचो

जिहि दिशि भय तिहि दिशि कबहु, ना जै यै करि चोज
गज तिहि मग पग ना धरे, जहा सिंह को खोज
दुर्दिन परे रहीम कहि, दुरथल जैयत भाग
ठाढे हूजत घर पर, जब घर लागत आग

भले बुरे दिनोंका अन्तर

दिवस भले बिगरै न कछु, रहो निचीते सोय
आवे चोरी करन को, चोर आवरो होय
प्रापतिके दिन होय है प्रापति बारम्बार
लाभ होत व्योपार मे, आमत्रण अधिकार
अप्रापति के दिनन मे, खर्च होत अविचार
घर आवत हैं पाहुने, बनज न लाभ लगार
भली किये ह्वै है बुरी, देखो विधि विप्रीति
भक्ति करी द्विज जमदग्निनि, अर्जुन करी अनीति
रहिमन चुप ह्वै बैठिये देख दिनन को फेर
जब नीके दिन आयहै, बनत न लग है देर

सवैया

बन्धुँ विरोध करे सिगरो झगरो नित होत सुधारस चाटन
मित्र करै करनी रिपुकी धरनी धर देखन न्याउ निपातट

राम कहैं विष होत सुधा,घर नारि सती पतिसों चित फाटत
भा विधना प्रतिकूल जवै तव ऊट चढे पर कूकर काटत

भाग्य-फल

जाकी प्रापति होय सो, मिलै आपतैं आय
मेवा फोम हजार को, किहि किहि ठौर न पाय
होय वदा सो भाग्यमें, आपहि मिलि है आय
चूहा बिल को खोदि करि, पडै साप मुख जाय

भाग्य हीन

भाग्य हीन को ना मिलै, भली वस्तुका भोग
दाख पकै मुख पाक को, होत काक को रोग
भाग्य हीन को दैव हू, देत सु लेत वनेन
दीठ परे जहँ वस्तु तहँ, चले मूद के नेन
आवत समय विपत्ति को, मित्र शत्रु ह्वै जाय
दुहत होत वछ वँधन को, थम्भ मात को पाय
जो पुरुषारथ ते कहू, सम्पति मिलति रहीम
पट लागि वैराट घर, तपन रसोई भीम

छप्पय

गजा नर शिर भानु तापत दग्धन लाग्यो
विधि वश छाया हेत, ताड तरवर तर भाग्यो
ताहि जात तिहि ठौर, वृन्त ते फल इक टूट्यो
भयो भयानक शब्द, गिरत गजा शिर फूट्यो

श्री शिव सम्पति कवि भनै, सुनो मुख्य यह बात है
विपति सग लगिजात तहँ, भाग्य हीन जहँ जातहै

भावी

दूर कहा नियरे कहा, होन हार सो होय
जर सोंचे नारेलको, फलमें प्रगटै तोय
राम न जाते हरिन सग, सीय न रावण साथ
जो रहीम भावी कतहु, होती अपने हाथ॰
यह निहचै करि जानिये, जान हार सो जाय
गजके भुक्त कपित्थ लों, ज्यों गिरि बीच विलाय
जान हार सो जाय अरु, होन हार है जाय
रावणतें लका गई, बसे बभीषण पाय
तुलसी जस भवितव्यता, तैसी मिले सहाय
आप न आवै ताहि पैं, ताहि तहाँ लै जाय
सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलख कह्यो मुनि नाथ
हानि लाभ जीवन मरण, यश अपयश विधि हाथ
भरद्वाज सुन जाहि जब, होत विधाता वाम
धूरि मेरु सम जनक यमु, ताहि व्याल सम दाम

चौपाई

कल्पबेलि जिमि बहु विधि लाली, सींच सनेह सलिल प्रतिपाली
फूलत फलत भयो विधि वामा, जानि नजाय काह परिणामा
लिखत सुधाकर लिखगा राहू, विधि गति वाम सदा सब काहू

दोहा

हरि रहीम ऐसी करी, ज्यों कमान सर पूर
खैंच आपनी ओर को, डार दियो पुनि दूर

पद

करम गति टारे नाहिं टरी (टेक)
मुनि वसिष्ठ से पण्डित ज्ञानी सोध के लगन धरी
सीता हरन मरन दशरथ को बन में विपत परी
कहँ वह फंद कहाँ वह पारधि कहँ वह मृग चरी
सीता को हर लेग्यो रावण सुवरन लंक जरी
नीच हाथ हरिचन्द्र विकाने बलि पाताल धरी
कोटि गाय नित पुन्न करत नृग गिरगट जौनि परी
पांडव जिनके आप सारथी तिन पर विपत परी
दुर्योधन को गरब मिटायो यदु कुल नास करी
राहु केतु औ भानु चन्द्रमा विधि संजोग परी
कहत कबीर सुनो भाई साधो होनी होत खरी

घनाक्षरी

भावीको बनाव दाव अकथ अपार बल,
चलत न चारे हारे भूर बलवान हैं।
नल से नरेश गहि गादी से गिराय दीने,
नारि दमयन्ती कर छोरत अपान हैं।
भावी वश राम संग कंचन कुरंग धाये,
भ्रक्ष इव लीने कर बीच धनु बान हैं।

राम कवि ऐसे ही युधिष्ठर विचार वान,
आपद अपार सही हारे धन धान हैं ।



मतलबी-मित्र

अपनी अपनी गरज सब, बोलत करत निहोर
बिन गरजे बोले नहीं, गिरवर हू को मोर
स्वारथ के सब ही सगे, बिन स्वारथ कउ नाहिं
सेवैं पछी सरस तरु, निरस भये उड जाहिं
बिन स्वारथ कैसे सहैं, कोऊ कडवे बैन
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन
जिहि जासों मतलब नहीं, ताकी ताहि न चाह
ज्यों निस प्रेही द्रव्यके, तृन समान सुर नाह
नर कारज की सिद्धि लो, करैं अनेक प्रकार
छूटें रोग शरीर तैं, को बूढे उपचार
चहल पहल अवसर परे, लोक रहत घर घेर
ते फिर दृष्टि न आवहीं, जैसे फसल बटेर
सर सूखे पछी उडै, औरै सरन समाहिं
दीन मीन बिन पन्छ क, कहु रहीम कहँ जाहिं

कुण्डलिया

साईं सब ससार में, मतलब का व्योहार
जब लग पैसा गाठ में तबलग ताको यार

तब लग ताको यार यार संगहि संग डोलैं
पैसा रहा न पास,यार मुख मे नहिं बोलैं
कहि गिरधर कविराय, जगत यहि लेखाभाई
करत बेगरजी प्रीत, यार कोई बिरला साईं
कृतिघन कबहु न मानही कोटि करे जो कोय
सर्वस आगे राखिये, तऊ न अपना होय
तऊ न अपनो होय, भले की भली न माने
काम काढ चुप रहै, फेर तिहि नहिं पहचानें
कहि गिरधर कविराय,रहत नित ही निर्भय मन
मित्र शत्रु सब एक, दाम के लालचि कृतघन

दोहा

अपनी प्रभुता को सभै, बोलत झूठ बनाय
वेश्या बरस घटावती, जोगी बरस बढाय।

मित्र लक्षण

मित्र मित्र के काम कों देत विभव करि हेत
जैसे चन्द्र प्रकाश करि, रवि मण्डल ते लेत
मथत मथत माखन रहे, दही मही बिलगाय
रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय
जाल परे जल जात बहि,तजि मीनन को मोह
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाटति छोह

कहि रहीम सम्पति सगे, बनत बहुत बहु रीति
विपति कसौटी जो कसे, तेई साचे मीत

चौपाई

निज दुख गिरि सम रज के जाना,
मित्रके दुख रज मेरु समाना।
जिन के अस मति सहज न आई,
ते सठ हठ कत करत मिताई।
कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा,
गुण प्रगटै अवगुणहि दुरावा।
विपति काल करि शत गुन नेहा,
श्रुति कहि सन्त मित्र गुण एहा।
जो न मित्र दुख होहिं दुखारी,
तिन्हे विलोकत पातक भारी।

मिथ्याऽभिमान

यश मिथ्या अभिमान को, नेकहु जग मे नाहि
धन बन विगडैं बुल बुले, ज्यों वर्षा जल माहि
जो मिथ्या धन धाम पर, करता है अभिमान
मनो कूपकी मेड पर, सोवत चादर तान
धन धारा अरु सुतन मे, रहत लगाये चित्त
क्यो रहीम खोजत नहीं, गाढे दिन को मित्त

कहु रहीम केतिक रही, केती गई बिताय
माया ममता मोह परि, अन्त चलो पछिताय
अरे मरे कितने खरे, धरे चिता निज हाथ
गया न तू नहिं साथ तुव, जात नाम रघुनाथ
जगत जनायो जिन सकल, सो हरि जान्यो नाहि
ज्यों आँखन जग देखिये, आँख न देखी जाहिं
भजन कह्यो ताते भज्यो, भजो न एको बार
दूर भजन जाते कह्यो, सो तैं भज्यो गँवार

मूर्ख कृत निन्दा

दोष धरैं गुण को पिशुन, इह उर गुनिन बिसारि
जू के भय तैं बसन को, देत कहा कोउ डारि ?
जो बड़ेन को लघु कहैं, नहिं रहीम घटि जाहिं
गिरधर मुरली धर कहे, कछु दुख मानत नाहि
शशि की शीतल चाँदनी, सुन्दर सबहि सुहाय
लगे चोर चित में लटी, घटि रहीम मन आय
शीत हरत तम हरत नित, भुवन भरत नहिं चूक
रहिमन तिहि रवि को कहा, जो घटि लखै उलूक
शीतलता रु सुगन्ध की, महिमा घटी न मूर
पीनस वारे जो तज्यो, सोरा जानि कपूर
मूरख के अपवाद तें गुणी न होत मलान
ज्यों भौंकत है श्वान पै, धरै न गज कछु ध्यान

सवैया

पीनम वारो प्रवीन मिले, तौ कहा लौं सुगन्धि सुगन्ध सुघावे
कायर कोप चढै रन मे तो कहा लगि चारण चाव चढावै
जैसे गुणी को मिले निगुणी तो पुनी कहैं क्योकर ताहि रिझावे
जो पै नपुसक नाह मिलै तो कहा लगि नारि शृगार मनावै

मोह.ज्ञान अन्तर

मोह महातम रहत है, जौ लौं ज्ञान न होत
कहा महातम रहत है ?, आदित भये उद्योत
मोह प्रवल ससार मे, सब को उपजै आय
पालै पोपै रग वचन, द्वै है कहा कमाय
भये ज्ञान अज्ञान नहि, है अज्ञान न ज्ञान
भानु उपो तो तम नहीं, है तम उपो न भान

यथा योग्य.

यथा योग्य की ठौर विन, नर छवि पावै नाहि
जैसे रत्न कथीर मे, काच कनक के माहि
अपनी अपनी ठौर पर, सब को लागै दाव
जल में गाडी नाव पर, थल गाडी पर नाव
इक गुन तें सोभा लहैं, इक अवगुन अवरोह
शोभ उरोजन पीनता, त्यो कटि कृशता सोह
जा लायक जिहि होय सो, ताही ठौर मनोग
चन्देरी पति क्यो वरै रुक्मणि श्री हरि जोग

मान सरोवर ही मिलैं, हंसन मुक्ता जोग
सफरिन भरे रहीम सर, बक बालक नहिं योग
थे न यहा नागर बड़े जिन आदर तो आब
फूल्यो अन फूल्यो भयो, गँवई गाव गुलाब
धरले सूघ सराह के, रहे सबै गहि मौन
गधी गन्ध गुलाब को, गँवई गाहक कौन
यथा योग्य थिन को लहै, कहहु राम सम्मान
मूढ हसत हैं हहर कै, सुन सुरागकी तान

याचक निन्दा

सबतैं लघु है मागिबो, यामें फेर न सार
बलि पै याचत ही भयो, बामन तन करतार
तृन अरु तूल टुहून ते, हरुवी याचक आहि
जानत है कछु मागि है, पवन उडावत नाहि
इक बिन मागे ही लहै, मागे एक लहै न
घन जल सर सरिता भरै, चातक चोंच भरै न
माता स्तन पय पान को, समझ भीक की चाल
दातन उँगली धरत है, पछतावतहैं बाल
क्यहु न सम्पति भीक की, चिर स्थायनी होत
इत आवत उत जात है, यथा कला निधि जोत
मागे घटे रहीम पद, कितो करो बढ़ि काम
तीन पैग बसुधा करी तऊ बावनै नाम

रहिमन वे नर मर चुके, जो कहु माँगन जाहि
उनसे पहिले वे मरे, जिन मुख निकसत "नाहिं"

रहिमन याचकता गहे, बडे छोट ह्वै जात
नारायण हू को भयो, बावन आँगुर गात

ये रहीम घर घर फिरैं, मांग मधूकरि खाहिं
यारो यारी छोडदो, वे रहीम अब नाहिं

घर घर डोलत दीन ह्वै, जन जन याचत जाय
दिये लोभ चशमा चखन, लघु पुनि बडो लखाय

याचक नर के बदनते, हटत तेजकी जोत
जलद जलधिसे जल गहत, श्याम वर्ण क्यों होत

सवैया

हे करतार ! हा तोसो कहू कबहू जनि दीजिये काहुको टोटो
और लिखो जनि काहुके भाग्यमे मालके काजे महीपन मोटो
तू हु तो जानत है अपने जिय मागनेते कछु और न खोटो
जो गयो मागन तू बलि द्वार तो याहीते ह्वै गयो बावनछोटो

"मुझे दीजिये कुछ" यो कहि जब याचक कर फैलाता है
तभी शरीर कापने लगता उसका स्वर घट जाता है
उसी समय उसके शरीरसे ये पांचो हट जाते हैं
ज्ञान तेज बल और मान यश अधम प्राण रह जाते हैं



घनाक्षरी

चातुर चालाक श्राक वक्ता हो विशुद्ध सूर,
भूर बलवान गान गायक रिझात है।
पण्डित अखण्ड गुण वारिध सुमडित हो,
चन्द्रमा समान रूप योवन दिखात है।
कविता सुलीन छन्द बन्धत विहीन दोष,
समता न जक्त माझ जाकर लखात है।
कहत सु राम जे तो गरुता गरूर सबै,
"दीजिये" कहे ते एक पल में दुरात है।

योग्यताकाही मान है

दोहा

भयो बडप्पन के विना, को उच्चासन जोग
बैठौ काग मुडेर पर, गरुड न माने लोग

कुण्डलिया

बड़े न हूजैं गुनन बिन, बिरद बडाई पाय
कहत धतूरे सो कनक, गहनो गढो न जाय
गहनो गढो न जाय, धतूरे सो किहि भाँती
पुष्कर जलसों कहत, सुरभि नहीं गध सुहाती
चन्द कपूर न कान्ति, जाति उडि त्यों दिन दूजैं
सु कवि नामते कहा, गुनन बिन बडे न हूजैं

लक्ष्मी चञ्चल है

साची सम्पति और की, और भोगिबे आय
कन समह चींटीन को, ज्यो तीतर चुग जाय
धन अरु गेंद जु खेलको, दोऊ एक सुभाय
करमे आवत छिनकमे, छिनमे करते जाय
कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय
पुरुष पुरातनकी वधू, क्यो न चचला होय
कमला थिर न रहीम कहि, लखत अधम जे कोय
प्रभुकी सो अपनी कहै, क्यो न फजीहत होय
नारी काहू एक की, अपनी कहे न कोय
हरि नारी अपनी कहे, क्यो न फजीयत होय

लोभ निन्दा

निज परछाई नीर मे, देखत लपको श्वान
मुख हू की रोटी बही, भौंकत रह्यौ अजान
नाशवान ससारमे, अधिक मोह मत मान
जो गठरी हलकी रही, मजिल है आसन
टरे न दुर्जन लालची, करो लाख अपमान
मक्खी फिर फिर आत है' तजे न जब लग प्रान



लोभभी वही अच्छाहे जो आशा पूरी करे

लालच भी ऐसो भलो, जासों पूरै आस
घाटे हू कहु ओसके, मिटत काहुकी प्यास ?
देत ठिकाना मांगिये, मागे मिले जु होय
मुनि घर भीतर कागही, ढूंढे लहत न कोय
अपने लालचके लिये, दुखहू आवे दाय
कान विंधाये राय गुरु, पहरें बीर बँधाय

वाचाल निन्दा, मौन महिमा

बकवादी को नीच पद, मौनीको सत्कार
नूपर पायन पडत है, चढत कुचन पर हार
पायल पाय लगी रहै, लगे अमोलक लाल
भोडर हू की भासि है, बेंदी भामिनि भाल
बहुत न बकिये कीजिये कारज अवसर पाय
मौन गहे बक दाव पर, मछली लेत उठाय

विचार-प्रशंसा

बुरे लगत हितके वचन, हिये विचारो आप
कडवी भेषज बिन पिये, मिटै न तनको ताप
करिये सुखको होत दुख, यह कहु कौन सयान
वा सोने को जारिये, जासों टूटै कान

भले बुरे जहं एकसे, तहां न बसिये जाय
ज्यों अन्यायपुर में बिके, खर गुर एकै भाय
निष्फल श्रोता मूढ पै, वक्ता वचन विलास
हाव भाव ज्यों तीय के, पति श्रो वेके पास
न करि राम रँग देख सम, गुण बिन समझे बात
गात धात गौ दूधतै, सेंहुड कै ते घात
बिन कुल गुन जाने बिना, मान न कर मनुहार
ठगत फिरत सब जगतको, भेप भक्तको धार
मूरखको पोथो दई, बांचन को गुण गाथ
जैसे निर्मल आरसी, दई अन्धके हाथ
हरि रस परिहरि विषय रस, सग्रह करत अजान
जैसे कोउ करत है, छोड सुधा विष पान
जासों निबहै जीवका, करिये सो अभ्यास
वेश्या पाल शील तो, कैसे पूरै आस
जाको जैसो उचित तिहिं, करिये सोइ विचार
गीदड कैसे स्याय है, गज मुक्ता गज मार
कहिये बात प्रमान की, जासों सुधरै काज
फीकौ थोरे लोनते, अधिकौ खाये नाज
चतुर कूर इक्से गनै, जाके नहीं विवेक
जैसे अबुध गँवार को, पाच काच है एक
अपनो समय विचार कै, अरि जीतिये अचूक

दिवस काग घूकहि हनै, कागहि निशि ज्यों घूक
छल बल समय विचारके, अरि हनिये अनयाम
कियो अकेले द्रौण सुत, निसि पाडव कुल नाम
सुन्दर थान न छोडिये, जौ लौ होय न और
पिछलौ पाव उठाइये, देख धरन की ठौर
फिर पीछे पछताइये, सो न करै मति सूध
बदन जीभ हिय जरत है, पीवत तातो दूध
इ गत तैं आकार तैं, जान जात जो भेट
तासों बात दुरै नहीं, ज्यों दाईसे पेट
सुनिये सब हीकी कही, करिये सहित विचार
सर्व लोक राजी रहै, सो कीजे उपचार
देखा देखी करत सब, नाहिन तत्व विचार
या को यह अनुमान है, भेड चाल ससार
तिहि प्रमाण चलिबो भलो, जो सब दिन ठहराय
उमड चलै जल पारतें, जो रहीम बढ़ जाय
रहिमन देख बडेन को, लघु न दीजे डार
जहा काम आवै सुई कहा करै तलवार
फल विचार कारज करो, करो न व्यर्थ झमेल
तिल सम बालू पेलिये, नाहिन निकसत तेल
पीछे कारज कीजिये, पहिले पहुच विचार
कैसे पावत उच्च फल, वामन बाह पसार

जो करिये सो कीजिये, पहले कर निर्धार
पानी पी घर पूछिये, नाहिन भलो विचार
पीछे कारज कीजिये, पहिले यतन विचार
बडे कहत हैं बाधिये पानी पहिले पार
ठीक किये विन और की, वात साच मत थाप
होत अंधेरी रैन में, परी जेवरी साप

कुण्डलिया

विना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय
काम विगारे आपनो, जग में होत हँसाय
जग में होत हँसाय, चित्त में चेन न पावे
खान पान सन्मान, राग रँग मनहि न भावे
कहि गिरधर कविराय, दु ख कुछ टरत न टारे
खटकत है जिय माहि, करे जो विना विचारे

चौपाई

सहसा करि पाछे पचताहीं, कहत वेद बुध ते बुध नाहीं

विद्या दान महात्म्य

निस दिन विद्या दान तैं, होत न विद्या दूर
खिंचत रहत जल कूप ते, तऊ रहत भर पूर



विद्या नीच से भी लो

उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पै होय
परयो अपावन ठौर पर, कंचन तजत न कोय

विद्या विहीन निन्दा

विद्या बिन न विराजई, यदपि सरूप कुलीन
ज्यों सोभा पावे नहीं, टेसू बास विहीन
होत बहुत धन होत तऊ, गुण युत भये उदोत
नेह भरयो दीपक तऊ, गुण बिन जोति न होत
कहा भयो जो धन भयो, आदर गुण तें होय
कोटि दीप भारी धनुप, गुण बिन गहत न कोय
नहीं रूप कुछ रूप है, विद्या रूप निधान
अधिक पूजियत रूप ते, बिना रूप विद्वान

विपरीत

जिय पिय चाहे तुम करो, घन चन्दन उपचार
रोग कठ औषधि कठू, कैसे होत क़रार
प्रेम पगत बरजी न क्यों, अब बरजत बे काज
रोम रोम विष रम गयो, नाहिन बनत इलाज
रोष मिटै कैसे कहत, रिस उपजावन बात
ईंधन डारे आग मे, कैसे आग बुझात
निपट अमिलती बातसों, कैसे करि है कोय
बसन नील के माट में, कबहू लाल न होय

विरह-दशा

विरही जनके चित्त को, नाहिं रहत बुधि बोध
थिर चर को बूझत फिरे, राघव सीता सोध
विरह रूप घन तम भयो, अवधि आश उद्योत
ज्यों रहीम भादों निशा, चमकि जात खद्योत
विरही जन व्याकुल रहै, भूलि जात सुख नैन
चकवा चकवी बिछुड ज्यों, तडपत है सब रैन

घनाक्षरी

छूटि जात ग्यान पान भूषन बसन भौन
छूटि जात चित्त देश प्रेम की पगन में
तात मात दारा पति पुत्र सखा बन्धु छूटे,
तन मन प्रान टूटे नैन की लगन में
रसिक बिहारी नेम धर्म परलोक लोक,
टूटिजात मोद बहु चित्त की ठगन में
यें ते सब टूटि जात रचक न लागै बार
विरह न छूटै नेक नेह की लगन में

सवैया

विरही समझायहु धीर हिये न धरै न धरै न धरै न धरै
जग लोगहिसों रसिकेश कछू न डरै न डरै न डरै न डरै

निज प्रीतम के बिन एक घरी न भरै न भरै न भरै न भर
विधि काहुहि प्रीय बिछोह कवौ न करै न करै न करै न करै
फल है तिहि के शत कर्मन को जिहि के जिय माहि सदा कल है
कल है नहि जाहि क्लेशनते न लगै कहु ताहि कटू भल है
भल है रसिकेश सदा अति सा हठ कै दृढ प्रेमहि जो न लहै
न लहै निज मीत वियोग कवौ जग जीवन को सुयही फल है

विरोध

रहैं न कबहू दोय रवल, एक सदन के माहि
एक म्यान में द्वै छुरी, जैसि समावै नाहि।

विश्वास-महिमा

सिद्ध होत मन कामना, तुलसी प्रेम प्रतीति
तिरिया अपने कारने, लिख पूजत है भीति

वैर है

छप्पय

वैर धनी निर्धनी, वैर कायर अरु सूरहि
घृत मधु माखी वैर, वैर निम्बूहि रपूरहि
मूसे सर्पहि वैर, वैर पावक अरु पानी
जरा जोवना वैर, वैर मूरख अरु ज्ञानी
दइ वर-चोर जिम चन्द सनु, विरहनि वैर बसतसों
नरहरी सुकवि कवित्त किय, भगत वैर अदत्त सों

शत्रुसे मित्रता न करो

वेर भाव जहँ भूल हू, मिलत न करिये कोय
मूसे और बिलार में, कबहू प्रीति न होय
निहचै कारन विपति को, किये प्रीति अरि सग
मृगको सुख मृगराजके, होत कबहु तन भग

कुण्डलिया

जाकी धन धरती हरी, ताहि न लीजे सग
जो चाहे लेतो बनै, तो करिडार निपग
तो करिडार निपग, भूल परतीति न कीजै
सौ सौ सौहैं खाय, चित्त मे एक न दीजै
कहि गिरधर कविराय, खटक नहि जै है ताकी
अरि समान पर हरिय, हरी धन धरतीजाकी

चौपाई

यदपि मित्र प्रभु पित गुरु गेहा, जाइय बिन बोले न सदेहा
यदपि विरोधमान जहँ कोई, तहाँ गये कल्याण न होई

शत्रुसे सचेत रहो

अरि छोटो गनिये नही, जातें होय बिगार
तृण समूह को तनिक मे, जारत तनक अगार
छोटे अरि पर चढहु सजि, सुभट शस्त्र तन त्रान
लीजै ससा अखेट पर, नाहरको सामान

कहु रसमें कहु रोसमें, अरि सों जिन पतिआय
जैसो सीतल तपत जल, डारत आग बुझाय
हीन जान न विरोधिये, हो अति तन दुखदाय
रजहू ठोकर मारिये, चढै सीस पर आय
कागजको सो पूतरा, सहिजहिमें घुल जाय
रहिमन यह अचरज लखो, सोऊ खीचत वाय
रिपु तेजसी अकेल अति, लघु कर गनिये न ताहु
अजहु देत दुख रवि शशिहि, शिर अवशेषत राहु

शिक्षा अधिकारीको देनी चाहिये

गुरहू सिखावै ज्ञान गुण, शिष्य सुबुध जो होय
लिखै खरधरी भीत पर, चित्र चितेरो कोय
सुबुध बीच पर दुहुन को, हरत कलह रस पूर
करत देहरी दीप ज्यों, घर आगन तम दूर
बुद्धि बिना विद्या कहो, कहा सिखावै कोय
प्रथम गाठही नाहिं तो, नीम कहा ते होय
सुबुध अबुध की सेव को, यह स्वरूप जिय थाप
थलमें रोपित कमल ज्यो, बधिर कर्ण ज्यो जाप
कहा करे आगम निगम, जो मूरख समझैन
दोष न दर्पण को कछू, अन्ध वदन देखैन
शास्त्र सुने निपफल सकल, जो नहिं होय विवेक
स्वाद न जानत कर्छली, चाखत पाक अनेक

निष्फल है मति मन्द को, यों उपदेश पवित्र
ज्यों अन्धे के सामने, महा मनोहर चित्र
अधिकारी को सीख दे, अनधिकारि को छोड़
बजर हो तो जोत ले, कल्लड को मत तोड़
सीख दीजिये पात्र को, त्याग कुपात्र कुठाम
जन्मत बीज सुखेतम, ऊपरमें नहिं जाम
शिक्षा कबहु न दीजिये, यथा योग्य बिन राम
लालटेन की रोशनी, अन्धे के किस काम
शिक्षा दिये सुपात्र को, होत बडो उपकार
मुनि प्रेरे-वाल्मीक से, सुख पावत ससार

सज्जन महिमा

अहित किये हू हित करे, सज्जन परम सधीर
सोखे हू शीतल करे, जैसे नीर समीर
उर ही तैं उत्तम प्रकृति, सज्जन परम दयाल
कौन सिखावत है कहो, राजहंस को चाल
जे उत्तमते अधम सों, धरत न रिस मन माहिं
घन गरजे हरि हूकरैं, स्यार बोल सुन नाहिं
बडे सहज ही बात से, रीझ देत बकसीस
तुलसीदल से विष्णु ज्यों, आक धतूरे ईस
सहज रसीले होय सो, करे अहित पर हेत
जैसे पीड़ित कीजिये, तऊ ईख रस देत

उत्तम पर कारज करें, अपनो काज बिसार
पूरे अन्न जहान को, ता पति भिक्षाधार
सन्त कष्ट सहि आपही, सुखि राखे जु समीप
आप जरें तउ और को, करें उजेरो दीप
बुरी करे पर जे भले, भली करें हित धार
जैसे बंधि बाध्यो तऊ, कपि दल दियो उबार
बड़े विपत हू में करें भल बिरानें काम
किय विराट पतिकी विजय, अर्जुन कर संग्राम
बड़े बड़ेई काम कर, आपु सराहत नाहिं
जय जस उत्तरको दियो, पथ विराटक माहिं
बिन पूछे ही कहत है, सज्जन हित के बैन
भले बुरेको कहत है, ज्यों तमचर गतरैन
बिना कहे हू सत पुरुष, परकी पूरें आस
कौन कहत है सूर को, घर घर करत प्रकास
जो घर आवे शत्रु हू, सुमन देत सुख चाहि
ज्यों काटे तरु मूल कउ, छाह करत वह ताहि
प्रीति छुटे हू सुजनके, मनतें हेत छुटेन
कमरा नालको तोरिये, तदपि सूत टुटेन
सज्जन के प्रय बचनतैं, मन सन्ताप मिटाय
जैसे चन्दन नीरतैं, ताप ज्यु तनका जाय

निश दिन खटकत तनक तृण, पडे जु आसन माहि
तिनमें सज्जन राखिये, सो छिन खटकत नाहिं
सुजन वचन दुर्जन वचन, अन्तर बहुत लखाय
वे सबको नीके लगें, वे काहू न सुहाय
तुला सुईकी तुल्यता, रीति सुजन की दीठि
गरुवे दिशि नै जात हैं, हरुवेको दै पीठि
जह तह सुजन मिलैं नहीं, गुण गरुवे जग माहि
ज्योति भरे पानिप भरे, प्रति गज मुक्ता नाहि
बहु धन बीते तनिक धन, सचै सुजन करैन
मनन हानि उपज तहा, कन कन कबहू भरैन
शील काम कुल युत चतुर, पुरुष परिक्षा जान
ताडन छेदन कस तपन, इनते कनक पछान
रस पीने बिनहीं रसिक, रस उपजावत सन्त
बिन बरसै सरसैं करैं, जैसे विटप बसन्त
जहा सुजन तहँ प्रीति है, प्रीति तहा सुख ठौर
जहा पुष्प तहँ वास है, वास जहा तह भौर
सुजन करत उपकार को, वित माफिक जग माहि
गहरे गहरी छाह तरु, विरले विरली छाहि
सज्जन सो रस पोखिये, त्यों त्यों बढत हुलास
जेतो मीठो वस्तु मे, तेतो अधिक मिठास

विपत पडे हू देत हैं, सत पुरुषन के काम
राज विभीषण को दियो, वैसी विरया राम
सुजन बचावत कष्ट तें, रहैं निरन्तर साथ
नयन सहाई ज्यो पलक, देह सहायक हाथ
सब कै सुख कर होत हैं, सत्पुरुषन के अंग
हरि चन्दन सों सुख लहैं, भृङ्ग भुजङ्ग विहङ्ग
यो रहीम गति बडन की, ज्यो तुरङ्ग व्यवहार
दाग दिवावत आप तन, सही होत असवार
तरुवर फल नहिं खात हैं, सरवर पियत न नीर
कहि रहीम पर काज हित, सन्तन धरे शरीर
आप करे उपकार अति, प्रति उपकार न चाह
हियरो कोमल सन्त सम, सुहृद सोइ नर नाह
मन से जग को भला चहे, हिय छल रहे न नेक
सो सज्जन ससार मे, जाको विमल विवेक
पशु पछी हू जान हे, अपनी अपनी पीर
तब सुजान जानौ तुम्हे, जब जानैं पर पीर
चटक न छाडत घटत हू, सज्जन नेह गँभीर
फीको परै न बरु घटै, रँग्यो चोल रँग चीर
बन्दौ सन्त समान चित, हित अनहित नहिं कोय
अंजलिगत शुभ सुमन ज्यों, सम सुगन्ध कर दोय
भले भलाई पै लहैं, लहैं निचाई नीच
सुधा सराही अमरता, गरल सराहो मीच

चौपाई

साधु चरित शुभ सरिस कपासू,
निरस विशद गुण मय फल जासू
जो सहि दुख पर छिद्र दुरावा,
वन्दनीय जिहि जग यश पावा
मुद मगल मय सन्त समाजू,
जो जग जगम तीरथ राजू
अकथ अलौकिक तीरथ राऊ,
देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ
बन्दौ सन्त असज्जन चरणा,
दुख प्रद उभय बीच कछु बरणा
बिछुरत एक प्राण हर लेही,
मिलत एक दारुण दुख देही
उपजहि एक सग जल माही
जलज जौंक जिम गुण बिलगाही
सुधा सुरा सम साधु असाधू,
जनक एक जग जलधि अगाधू
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू,
गरल अनल कलिमल सरि व्याधू
गुण अवगुण जानत सब कोई,
जो जिहि भाव नीक तिहि सोई

चौपाई

जग बहु नर मर सरि सम भाई,
जे निज बाढ बढहि जल पाई,
सज्जन सुकृत सिंधु सम कोई
देख पूर विधु बाढहि जोई,
देव ! देवतरु सरस स्वभाऊ,
सन्मुख विमुख न काहुहि काऊ
उमा सन्त की यहे बडाई,
मन्द करत जो करे भलाई
सन्त असन्तन की अस करनी,
जिम कुठार चन्दन आचरनी
काटिये मलय परसु सुन भाई,
निज गुण देइ सुगंध बसाई
पर उपकार वचन मन काया,
सत सहज स्वभाव खग राया
भूरज तरु सम सत कृपाला,
पर हित सह नित विपत विशाला
सत हृदय सनतत सुखकारी,
विश्व निदत जिमि इन्दु तमारी
सत सहहिं दुख पर हित लागी,
पर दुख हेत असत अभागी

सत विटप सरिता गिरि धरनी,
पर हित हेत इन्हन की करनी
सत हृदय नवनीत समाना,
कहा कविन पै कहै न जाना
निज परिताप दहै नवनीता,
पर दुख द्रवहि सुसत पुनीता

दोहा

हित करियत यहि भातिसों, मिलयत हैं वहि भांति
छीर नीर ते पूछले, हित करवे की बात

मालिनी

दिनकर कमलों को स्वच्छ देता सुहास
शशि कुमुद गणों को रम्य देता विलास
जलद बरस ते हैं भूमिमें अम्बु धारा
सुजन विन कहे ही साधते कार्य सारा
विकल अति क्षुधासे देखके पुत्र प्यारा
जननि हृदय से है छूटती दुग्ध धारा
लख कर कुदशा त्यों दीन दु खी जनोंकी
सहज प्रगट होती है दया सज्जनोंकी
लहर रहित होता है पयोधि प्रशान्त
सुहृदय रहते त्यों धीर गम्भीर शान्त
दुख सुख भय चिंता आदिसे हो अलिप्त
स्थिर मति रहते हैं साधु ही आत्म तृप्त

सब नद नदियों का नीर धारा प्रवाही
वह कर मिलता है सिन्धु में सर्वदा ही
तदपि न तजता है आत्म मर्याद सिंधु
सु विपुल सुख में भी गर्व लाते न साधु
यदि सब सरितायें ग्रीष्म में शुष्क हों भी
वह उदधि रहेगा पूर्ण ही मित्र तो भी
धन सुख प्रभुता का सर्वथा हो अभाव
पर सम रहता है सज्जनों का स्वभाव

सवैया

सन्त करैं नहि वैर कहू सबके हित में बरतैं अतिहीं
ता तन को जब दाहत कौ वह तदपि देत सुवासित हीं
जैसे कुठार कटै तरु चन्दन गंध तिसै मुख दे रत ही
हेतु यही सर्वोतम हेरत ता पद रज नमो नितही

दोहा

तन दाहन छेदन पिसन सहे कनक छवि पाय
त्यों दुर्जन के वचन सह, सज्जन सन्त कहाय
कष्ट दिये पर साधु जन, तजैं न पर उपकार
चन्दन को फूकत तऊ, देत सुगंध अपार॥
सन्त कृपा रवि उदय ते, मिटै तिमिर अज्ञान
हृदय सरोवर विमल ह्वै, फूले हित बुध ज्ञान

सज्जन स्व वचनों की रक्षा करते हैं



सज्जन अंगीकृत कियो, ताको लेहि निवाह
　　छई कलंकी कुटिल शशि, तउ शिव तजत न ताह
बड़े भार लै निरवहैं, तजत न खेद विचार
　　शेष धरा धरि धर धरै, अवलों देत न डार
बड़े वचन पलटैं नहीं, कहि निरवाहैं धीर
　　कियो विभीषन लंक पति, पाय विजय रघुवीर
कहे वचन पलटैं नहीं, जे सत पुरुष सधीर
　　कहत सबै हरिचन्द्र नृप, भरयो नीच घर नीर
वचन तजैं नहिं सत पुरुष, तजैं प्राण वरु देश
प्राण पुत्र दुहुँ पर हरे, वचन हेत अवधेश

घनाक्षरी

सूर्य्य और चाँदहु की ज्योति टर जाय भले,
सज्जन का वैन पै न नेकु कभी टर है।
धन और सम्पति के नाश का न ख्याल लेश,
पर उपकार हेतसर्व परिहर है।
सत्य पक्ष पाति निज सत्य ही को सत्य जान,
राम कवि अन्त लगि ताहि अनुसर है।
सामने है कौन ? और होगा परिणाम कैसा
वीर न विचार कभी ताह पर कर है॥

सोच रूप सागर मे सने रघुराई कहैं,
लक यह देन को तो लगे कुछ घात है।
कौन या विभीषण को राखे रोक रावण ते,
जीव जाल मछरी सौ परयो पछतात हे।
लक्ष्मण पाछे मै हू मरण परण लीनो,
जस राम तुगे न्यात टूटी बुधि जात है।
जीव को न लालच वचन को विशेष डर,
जीव गये वचन बचै तो बडी बात है।

कुण्डलिया

पुत्र प्राण सब ते बडे, चारो युग परमान
ते राजा दो तजे, वचन न दीने जान
वचन न दीने जान, बडन की यहै बडाई
वचन रहे सो काय, और सर्बस छिन जाई
कहि गिरधर कविराय, भये नृप दशरथ ऐसे
प्राण पुत्र परहरे, वचन परहरे न तैसे ❀

सत्य प्रशंसा

सत्य वचन मुख जो कहत, ताको चाह सराह
गाहक आवत दूर तें, सुन इक सच्चो साह
अरि हू बूझे मंत्र को, कहिये साच सुनाय
ज्यों भीषम पाण्डवन को, दीनो मरम बताय
कहिये जासों जो हितू, भलो बुरो ह्वै जाय
चोर करै चोरी तऊ, साच कहै घर आय

चलिये पैंडे साच के, साईं साच सुहाय
साचो जरै न आग तै,झूठो ही जर जाय
आच न लागे साच को, यामें ना कुछ भूल
सोना पावक मे पडे, घटत तोल नहिं मूल
कार्य सिद्व हो सत्य सों, रहो निकट या दूर
सीधे सरसों धनुर्धर, बेधत लक्ष्य जरूर
का ब्राह्मण का डोम भर, का जैनी कृस्तान
सत्य बात पर जो रहे, सोई जगत महान
न्याय चलत विगरै कछु , तौ न करो अफसोस
धार परत जो राज पथ, तौ न देत कोउ दो
सत पथ चलते दुख मिलै, तऊ न आनत हान
हरिश्चन्द्र की गाथ को, जानत सकल जहान

सत् सङ्गति महिमा

रहे समीप बडेन के, होत बडो हित मेल
सब ही जानत बढत है वृक्ष बराबर बेल
गरुता लघुता पुरुष की, आश्रय वशते होय
करी वृन्दमे विंध्य सो, दर्पण मे लघु सोय
एक भलो सबको भलो, देखो सबद विवेक
जैसे सत हरिचन्द्र के, उधरे जीव अनेक
होय शुद्ध मिटि कलुपता, सत संगतिको पाय
जैसे पारसको परस, लोह कनक ह्वै जाय

उत्तम जनके सगमे, सहज होत सुख भास
नृपति लगावै इतर जो, लेत सभा मब बास
जाके सग अवगुण दुरै, करिये तिहि पहिचान
जैसे मानें दूध सब, सुरा अहीरी पान
जैसी सगति तैसिये, इज्जत मिलि है आय
सिर पर मखमरा सेहरो, पनही मखमल पाय
होत सुसगति सहज सुख, दुख कु सगके थान
गधी और लुहार की, देखो बैठ दुकान
सुधरै बिगरि कुसगते, सत सगतिको पाय
यामहि सीकर हीग की, जीरा सग मिटि जाय
उत्तम जन सो मिलत ही, अवगुण हू गुण होय
घन स ग खारो उदधि मिल, बरसै मीठो तोय
दुखदाई सोई लेत सुख, सुखदाई सँग जात
घट जल भीजे चीर को, लागि लुय सियरात
सदा सुथान प्रधान है, बल न प्रधान बतात
नाग डरावत गरुर को, हर उर हार प्रभात
नीचहु उत्तम सग मिलि, उत्तमही ह्वै जाय
गग सग जल ह्य्लू, गगोदक वै भाय
बुरो तऊ लागत भलो, भलो ठौर पर लीन
तिय नयना नीको लगै, काजर यदपि मलीन

चौपाई

सठ सुधरहिं सत संगति पाई,
पारस परस कुधातु सुहाई।
गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा,
कीचड़ मिलइ नीच जल संगा।
सोइ जल अनल अनिल संघाता,
होय जलद जग जीवन दाता।
धूमऊ तजै सहज करुआई,
अगर प्रसंग सुगंध बसाई।
सोइ भरोस मोर मन आवा,
किहि न सु संग बड़प्पन पावा।
कर्म्म नाश जल सुर सरि परई,
तिहि को कहो सीस नहिं धरई।
उलटा नाम जपत जग जाना,
बालमीक भये ब्रह्म समाना।
बिन सत संग विवेक न होई,
राम कृपा बिन सुलभ न सोई।
विधि बश सुजन कुसंगति परहीं,
फणि मणि सम निजि गुण अनुसरहीं।
मणि माणिक मुक्ता छवि जैसी,
अहि गिरि गज शिर सोह न तैसी।

नृप किरीट तरुणी तनु पाई,
लहहि सुयश शोभा अधिकाई ।

दोहा

ग्रह भेषज जल पवन पट्ट, पाय कुयोग सुयोग
होहिं कु वस्तु सुवस्तु जग, लखहि सु लक्षण लोग

हरिगीत

मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथकी
गति कूर कविता सरितकी ज्यों परम पावन पाथ की
प्रभु सुयश संगति भणित भलि होयहि सुजन मनभावनी
भव भूति अंग मसानकी सुमिरत सुहावन पावनी

घनाक्षरी

मलय की संगति में चन्दन हूं जात वन,
पारस लगे में लोह सोना होय जात है ।
नल के सहारे नीर चढत अकास पर,
फल संग पात एक भाव में बिकात है ।
महा गुणगान नारायण की सुसंगति से,
मन्द मति राम कवि सुकवि कहात है ।
संगति सुधार देत दुष्ट औ कुकर्म्मियों को,
संगति ही फूटी तकदीर को बनात है ।



अन्धेर ❀

पड़े हैं बन्धन में गजराज, मुक्त फिरता है श्वान समाज
कुढंगा है कोकिल का साज, धरा कूकर के सिर पर ताज
इसे हम कहें दिनों का फेर, या कहें दुनिया का अन्धेर
कूप का निर्मल शीतल नीर, महा खारी है उदधि गँभीर
ईश के भक्त अशक्त अधीर, दुष्ट राक्षस होते हैं वीर

घरों में अजा वनों मे शेर
देखिये दुनिया का अन्धेर

नहीं घटती तारों की आब, नहीं थिर माहताब की ताब
कुशलसे किंशुक खिले जनाब,कठिन काँटोंमे खिले गुलाब

रत्न कम पत्थर के है ढेर-
देखिये है कैसा अन्धेर -

पर्वतोंमे सोनेकी खान, राजपूताना रेगिस्तान
शख का है सूखा सम्मान, किया सीपी को मुक्ता दान

विधाताकी सुबुद्विका फेर
हो रहा है विचित्र अन्धेर

कहा वह कमल कहा वह कीच, न समझा उच्च न समझा नीच
लगाया है कलंक शशि बीच, ले गया वह मनोज्ञता खीच

❀ इस अन्धेरकी रोशन व्याख्या देखिये "पद्य-परीक्षा" पृष्ठ ४७
मिलनेकापता—चेतान प्रिंटिङ्ग वर्क्स चाह रहट देहली

दिया है गरल सुधा में गेर
विधाता यह कैसा अन्धेर
महा गुण कारी कडवी नीम, बताते डाक्टर वैद्य हकीम
भरे मीठेमें दोष असीम, बिकें दो गिन्नी सेर अफीम
और गुड दोही आने सेर
कौन यह कहे नहीं अन्धेर
महाज्ञानी थे अष्टावक्र, और पर-सन्तापी है शक्र
चलाता है विधि ऐसा चक्र, किया करता है ऐसे मक्र
लगे अन्धे के हाथ बटेर
लोग हैं चकित देख अन्धेर
खपाया किये जान मजदूर, पेट भरना पर उनका दूर
उडाते माल धनिक भर पूर, मलाई लड्डू मोती चूर
सुधरनेमें है जग के बेर
अभी है बहुत बडा अन्धेर
अन्न दाता हैं धीर किसान, सिपाही दिखलाते हैं शान
डराते उन्हें तमाचा तान, तुम्हें क्या सूझी हे भगवान
आंवले खट्टे मीठे बेर
किया है क्यो ऐसा अन्धेर
किलीपाइनके हिंसक लोग, जिन्हें था कल तक पशुता रोग
भोगते हैं स्वराज्य सुख भोग, पडा आकर ऐसा सयोग

रहा है भारत पर मुख हेर
बडा अन्धेर बडा अन्धेर-

सवल में तेज होता है

सवल न पुष्ट शरीर को, सवल तेज युत होय
हृष्ट पुष्ट गज दुष्ट ज्यों, अंकुस के वश सोय
विना तेजके पुरुष को, अवश अवज्ञा होय
आगि बुझै ज्यों राख कों आन छुवै सब कोय
मंत्र परम लघु जासु वश, विधि हरि हर सुर सर्व
महा मत्त गजराज कहँ, वश करि अंकुश खर्व
"चौपाई।
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा, सोख्यो सुयश सकल ससार
रवि मण्डल देखत लघु लागा, उदय तासु त्रिभुवन तम भागा

सवल से वैर करना बुरा है

कैसे निवहै निवल जन, कर सवलन कों गैर
जैसे वसि सागर विषे, करत मगर सों वैर
सवै सहायक सवल के, निवल न कोउ सहाय
पवन जगावत आगको, दीपहि देत बुझाय
कछु वसाय नहिं सवल सों, करै निवल पै जोर
चलै न अचल उखार तरू, डारत पवन झकोर
एक बुरो सवको बुरो, होत सवल के कोप
औगुन अर्जुन के भयो मव छत्रिन को लोप

हरत दैव हू निबल अरि, दुर्बल ही के प्रान
बाघ सिंह को छोड़ कै, देत छाग बलि दान
छोड सबल को निबल की, कबहु न गहिये ओट
जैसे टटी डारमों, लाग सिलर चोट
तिन के कारज होत हैं, जिनके बडे सहाय
कृष्ण पच्छ पांडव बचें, कौरव गये बिलाय
सब धकावैं निबलको निबल पुरातन पाठ
डारै जार निहाय दै, अनिल अनल जल काठ
जोर न पहुचे निबल को, जो पै सबल सहाय
भोडर की फानूस को, दीप न बात बुझाय
निबल सबल के पच्छ तें, सबसन मांगे अनखान
हनत हिमायल की गरी, ऐराकी को लात
प्रीति विरोध समान सन, करिय नीति अस आह
जो मृगपति बध मेडकहि भलो कहत को ताह
सबलपच्छ से निबल जन, सबल शत्रु से मारत
अहि हर उर बसि अभय मन,गरुड दिखावै आरत

कुण्डलिया

साईं बैर न कीजिये, गुरु पण्डित कवि यार
बेटा बनिता पैंवरिया, यज्ञ करावन हार
यज्ञ करावन हार, राज मन्त्री जो होई
बिप्र परौसी बैद्य, आप को तपै रसोई

प्राण तृषातुर के रहें, थोरे हू जल पान,
पीछे जल भर सहस घट, डारे मिलत न प्रान
समय समझ के कीजिये, काज वहै अभिराम
सैंधव मागयो जीमते, घोड़ा को किहि काम
देवो अवसर को भलो, जामो सुधरै काम
खेती सूखे बरसिवो, घन को कौने काम
बनती देख बनाइये, परन न दीजे खोट
जैसी चले बयार तब, तैसी दीजे ओट
सुखदाई पै देत दुख, सो सब दिन को फेर
शशि शीतल संयोग में, तपत विरह की बेर
विधि के विरचे सुजन हू, दुरजन सम ह्वै जात
दीपहि रागे पवन तें, अचल वहै बुझात
विष हू तें सरसो लगें, रस में रिस की भाख
जैसी पित्त ज्वरीन की, कडवी लागत दाख
कहूं अवगुण सो होत गुण, कहुं गुण अवगुण होत
कुच कठोर त्यों हैं भले, कोमल बुरे उदोत
जैसी हो भवितव्यता, तैसी बुद्धि प्रकाश
सीता हरिवे ते भयो, रावण कुल को नाश
निहचै भावीको कहै, प्रती कार जो होय
तो नल से हरिचन्द्र से, विपति न भरते कोय

कछू सहाय न चल सके, होनहार के पास
भीष्म युधिष्ठिर से भयो, कौरव कुल का नाश
कारज धीरे होत है, काहे होत अधीर
समय पाय तरुवर फरै, केतिक सींचो नीर
होत सिद्ध जैसे समय, तैसी ही अविलाख
कौडी विन जात न लियो, करी तियो दे लाख
न कछु तऊ जाकी तलब, ताही की मनुहारि
तिलक समय नृप लेत हैं, तृण हू हाथ पसारि
गुणी तऊ अवसर विना, आदर करे न कोय
हियते हार उतारिये, शयन समय जब होय
कारज ताही को सरै, करै जो समय निहारि
कबहुँ न हारे खेल में, खेलै दाव विचारि
जो हाजिर अवसान पर, सोई शस्त्र प्रमान
दामहि तें बलदेव ज्यों, हरे सूत के प्रान
अवसर वीतें यत्न को, करिवो नहिं अभिराम
जैसे पानी वह गयो, सेतुवन्धु कहि काम
आए आदर ना करे, पीछे लेत मनाय
घर आए पूजे न अहि बावीं पूजन जाय
अपने अपने समय पर सबको आदर होय
भोजन प्यारो भूख में, तिस मे प्यारो तोय

प्यारी अन प्यारी लगे, समय पाय सब बात
धूप सुहावे शीत में, सो ग्रीषम न सुहात
वय समान रुचि होत है, रुचि समान मन मोद
बालक खेल सुहाव ही, योवन विषै विनोद
सुनत श्रवण पिय के वचन, हिय विकसै हित आगि
ज्यो कदम्ब वर्षा समय, फूलत चूटन लागि
निरस बात सोई सरस, जहा होय हिय हेत
गारी हू प्यारी लगै, ज्यों ज्यों समधिन देत
अरुण सिरोरुह कर चरण, दृग खजन मुख चन्द
समय आय सुन्दरि शरद, काहिन करत अनन्द
समय समय सुन्दर सबै, रूप कुरूप न कोय
मन की रुचि जेती जितै, तितै तिती रुचि होय

चौपाई

तृषित वारि बिन जो तनु त्यागा, मुये करेका सुधा तडागा
का वर्षा जब कृषी सुखानी, समय चूक पुनि का पछतानी

कुण्डलिया

साईं समय न चूकिये, यथा शक्ति सन्मान
को जाने को आइ है, तेरे पौरि प्रमान
तेरे पौरि प्रमान, समय असमय तक आवै
ताको तू मन खोल, अक भर हृदय लगावै

कहि गिरधर कविराय, सबै आमें सधि आइ
शीतल जल फल फूल, समय जिन चूको साईं
बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेइ
जो बनिआवे सहज में, ताही में चित देइ
ताही मे चित देइ, बात जोई बन आवे
दुर्जन हँसे न कोय, चित्त मे खता न खावे
कहि गिरधर कविराय, यहै कर मन परतीती
आगे को सुख समझ होइ बीती सो बीती
राजा के दरबार में, जैये समया पाय
साईं तहा न बैठिये, जहँ कोउ देइ उठाय
जहँ कोउ देइ उठाइ, बोल अन बोले रहिये
हँसिये नहीं हहाय, बात पूछे ते कहिये
कहि गिरधर कविराय, समय से कीजे काजा
अति आतुर नहिं होय, बहुर अनखैहै राजा

छप्पय

समय मेघ बरसत समय सिर होय सबै फल
तरुणाई ही समय, समय ही ज्ञान देह बल
समय सुजन हू मिले, समय पण्डित हू चूके
समय प्रीति चित घटे, समय सरवर हू सूके
कोऊ द्वारजु आवे समय सिर, समय पाय गिरिवरहि गिर
गोविंद अटल करि नन्द कहि जो कीजै सो समय सिर

चौपाई

सकुचे तात कहत इक याता, अर्ध तजहि बुध सर्वस जाता

सहाय प्रशंसा

अयल हु के अवलम्ब तें, पूर्ण होत है आश
पाय सहारा सूत का, मोम हु करत प्रकाश

सहोदर भ्राताओंका स्वभावभी भिन्न होताहै

एक उदर, वाही समय, उपजत इक से होय
जैसे काटे बेर के, वाके सीधे दोय
यदपि सहोदर होय तउ, प्रकृति और की ओर
विष मारै ज्यावै सुधा, उपजैं एकहि ठौर
मारे इक रक्षा करे, एकहि कुल के दोय
ज्यों कृपाण अरु कवच ये, एक लोह के होय
होय भले का सुत बुरो, भलो बुरे को होय
दीपक ते काजल प्रगट, कमल कीच ते सोय

चौपाई

उपजहि एक सग जल माहीं,
जलज जोक जिमि गुण बिलगाहीं।
सुधा सुरा सम साधु असाधू,
जनक एक जग जलधि अगाधू।



घनाक्षरी

एक बीज एक मूल एक डार एक स्थान,
एक खान पान फूल शूल के लखानिये।
एक सुखदाई अरि मीत को विवेक तज,
तन मन ताको परमार्थ होत जानिये।
कठिन कठोर एक महाँ दुख दायक है,
अग चुभ दूसरों के पीड अधिकानिये।
राम कवि अपने सुकर्म ते बडाई होत,
कुलसों बडाई कहो कैसे कर मानियें।

सर्व मान्य सिद्धान्त

मागत गौरव नाश हो, प्रसवत यौवन रोप
रहत न विनय प्रणाम लखि,मत पुरुसनका कोप
सम संतोष न और सुख, तप नहि क्षमा समान
ब्रह्म ज्ञान सम ज्ञान नहि, धर्म न दया समान

सामर्थ्य-सीमा

अपनी पहुच विचार कै, करतब करिये दौर
तेतो पाव पसारिये, जेती लाबी सौर
अन मिलती जोई करत, ताहीको उपहास
जैसे योगी योगमे, करत भोगकी आस
बडे बडनके दुख हरत, पै न नीच यह काम
घन मेटत पै ना सरित, गिरिवर ग्रीष्म ताप

होय बडेरु न हूजिये, कठिन मलिन मुख रग
मर्दन बधन छत सहत, कुच इन गुनन प्रसग
कोऊ बिन देखे सुने, कैसे कहे विचार
कूप-भेक जाने कहा, सागरको विस्तार
जो समझै जा बातको, सो तिहि कहे विचार
रोग न जाने ज्योतिषी, वैद्य ग्रहनको चार
जो लायक जा बातको, तासों तसी होय
सज्जन सो न बुरी करैं, दुर्जन भली न कोय
बडे बडनके जात हैं, बड़े हरैं दुख वन्द
कुहू भवन मे जाय कै, चन्द भये जग वन्द
प्रापति तैसी होत सो, जिहि जैसा लाभाय
भाजन मित सर सरित तें, जल भरि भरि लैजाय
उत्तम जनकी होड़ कर, नीच न होत रसाल
कौवा कैसे चल सके, राज हसकी चाल
क्यो कीजै ऐसो यतन, जातें काज न होय
पर्वत पै खोदे कुँवा, कैसे निकसै तोय
है है बडे बड़ेन सों, होय न छोटे काज
गहे विटप ढुफतीन को, गहिं न सकै गजराज
होय पहुँच जाकी जिती, तेतो करत प्रकाश
रवि सम कैसे कर सकै, दीपक तम को नाश
विपति बडेई सहि सकैं, इतर विपति तें दूर
तारे न्यारे रहत हैं, गहै राहु शशि सूर

जाय दरिद्र कनि जनन को, सबैं गज समाज
सिंह तृपित जब होत है, हाथ चढ़े गज राज
वीर पराक्रम ना करै, तासो डरत न कोय
बालक हू का चित्र को, बाघ खिलोना होय
वीर पराक्रम ते करें, भूमण्डल को राज
जोरावर यातैं करत, बन अपनो मृगराज
नियहै सोई कीजिये, पन अपनो अनुमान
कैसे होत गरीब पै, राजा को सो दान
जो धनवन्त सो देत कछु, देय कहा धन हीन
कहा निचोरै नग्न जन, न्हान सरोवर कीन
छोटे मन में आय है, कैसे मोटी बात
छेरी के मुह में दियो, ज्यों पेठा न समात
मान धनी नर नीच पै, याचै नाही जाय
कबहुँ न मांगे स्यार पै, वरु भूको मृगराय
छोटे नर सों बडन को, कबहू बुरो न होय
फूस आग नहिं कर सकत, तपत उदधिको तोय
जिहि जेतो अनुमान तिहिं, तेतो रिजक मिलाय
कन कीडी टूकर टुकर, मन भर हाथी खाय
यथा शक्ति ही देसकै, जो कछु जाके पास
ब्राह्मण कन चांवर दियो, श्री पति धन आवास
निर्धन ते कब होत है, धनवानन की रीस
यह कागज के फूल को, कौन चढ़ावत सीस

उत्तम के कर्त्तव्य को, करत न नीच गुलाम
पग-उंगली कब करत है, गठ खोलन को काम
कैसे छोटे नरन ते, सरत बडन के काम
मढो दमामो जात है, कहिं चूहेके चाम
चले जाहु या को करत, हाथिन को व्योपार
नहिं जानत इहि पुर बसै, धोबी और कुम्हार

सावधान रहो

जीवन रक्षा के लिये, मन को रख हुशयार
चोर चुरावत तब न जब, जागत चौकीदार
नीचे बन कर रहत हैं, पहुचे साधु उदार
ज्यों मंजिल पर जाय कर, प्यादा बने सवार
जो रहीम मन हाथ है, मनसा कहु किन जाहि
जल में जो छाया परी, काया भीजति नाहि
रह कह गुण ते अधिक, उपजत कष्ट शरीर
मधुरी वानी बोल कै, पडत पींजरे कीर

सीधी चाल

रहिमन सीधी चाल सों, प्यादा होत वजीर
फरजी मीर न हो सकै, टेढे की तासीर

सुखकर

एक बिरानोई भलो, जिहि सुख होत सरीर
जैसे वन की औषधी, हरत रोग की पीर

सेयौ छोटो ही भलो, जासों गरज सराय
कीजै कहा पयोधि को, जासों प्यास न जाय
बड़ी बडाई नीच की, दीजै अपने काम
खर हू को बोलत पथिक, कहत विनायक नाम
प्यासे दुपहर जेठ के, थके सब जल सोधि
मरु धर पाय मतीर हू, मारू कहत पयोधि
विषम विषादित की तृषा, जिये मतीरन सोधि
अमित अपार अगाध जल, मारो मूड पयोधि
अति अगाध अति ऊथरो, नदी कूप सर बाय
सो ताको सागर जहा, जाकी प्यास बुझाय

सुजन दुर्जन स्वभाव अन्तर

इक समीप बसि अहित कर, इक हित कर बसि दूर
हस निवारे कमल दल, अमल प्रकासे सूर
शिव सम्पति फल करत है, सुहृद जनन के हेत
दूरहि सूरज उदित ज्यों, कमलन को सुख देत
काज बिगारत और को, इक निज काज सुधारि
कियो मत्रिन मिल राज नृप, सुरथहि ल्यों निकारि
काज बिगारत आपनो एक और के काज
वलिहि निवारत नैन की, हानि सही कविराज
परधन लेत छिनाय इक, इक धन देत हमंत
शिशिर करत पत भार तरु, गहिरे करत वसंत

सुपुत्र प्रशंसा

गाहक सबै सपूत के, सारै काज सपूत
सब को दम्पन होत है, जैसे बन को सूत
आप कष्ट सहि और को, सोभा करत सपूत
'चरखी,'पोजन,'चरखिना, जग दम्पन ज्यों सूत
बहुत भये किहिं काम के, भारनिगाहक एक
शेष धरै धर सीस पर, मेंडक भरी अनेक
एकहि भले सुपुत्र तैं, सब कुल भलो कहात
सरस सुवासित विरछ ते, ज्यों बन सकल बसात
पिता भक्त सुत होय तो, पितु को चलत सुभाय
राम राज सब छोड़ कै, बन वासी भये जाय
श्रवण करी त्यों कीजिये, मात पिता की सेव
काँधे कावर लै फिरयो, पूज्यो जैसे देव
सुत सपूत की कीर्ति लखि पिता अधिक सुख पाय
ज्यों राकाशशि छवि लखत, उदधि बढत हर्षाय
इक सपूत जन्म्यो भलो, बहु कपूत नहि 'राम'
इक शशि निशा तम हरतु है;नखत समूह निकाम
यदपि होत पितु मात को, सब सुत पर सम नेह
लखि सपूत ठण्डक लहै, जरै कुसुत लखि देह
कुलहि प्रकाशै एक सुत, नहि अनेक सुत निन्द
चन्द एक निशा तम हरै नहि उडगन के वृन्द

चन्दन चन्द उशीर हिमोपल,
हिम रजनी भी और कपूर
ये सब मिल कर भी न करेंगे,
मानव हृदय ताप को दूर
पर सपूत जिस कुल में होगा,
उसका समय आपही आप
पलट जायगा यश फैलेगा,
मिट जायेगा सब सन्ताप
विमल चित्त हो दानशील हो,
सूर वीर हो सरल विचार
सत्य वचन हो प्रेम युक्त हो,
करे सभी से सम व्यवहार
ज्ञानी सहृदय हो उपकारी,
और गुणी हो अपना धर्म
कभी न छोड़े, देश भक्त हो,
ये सब सत्पुनों के कर्म

दोहा

कुल सपूत जान्यो परै, लखि शुभ लक्षण गात
होनहार बिरवान के, होत चीकने पात
बचपन ही में करत है, चतुराई की बात।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात

मानैं काच गँवार तउ, पाच काच नहि होय
भेष बनावै सूर को, कायर सूर न होय

खाल उढाये सिंह की, स्यार सिंह नहि होय
कैसे हू छुटती नहीं, जा मे पडी कुव न

काग न कोकिल हो सकै, जो विधि सिखवै आन
देवन हो से देय प्रभु, कहा सुरेश नरेश

कीनी मीत धनेश तउ, पहरैं चरम महेश
भले वचन मुख नीच के, नाहिन होत प्रकाश

हींग लसुन में ना मिले, घन कस्तूरी वास
नीच कुसंगति के मिले, करत नीच सो प्यार

खर को गंग न्हवाइये, तऊ न छोड़त छार
सज्जनता न मिले किये, जतन किये किन कोय

ज्यों कर फाड़ निहारिये, लोचन बडो न होय
एकत्र हू रह सुजन खल, तजत न अपनो अंग

मणि विष-हर, विष-कर सरप, सदा रहत इक संग
भली बुरी जो आदरें, कौन सकै निरवारि

शीत विमल पावन करन, चलत नीच गति व्यारि
करै न कबहू साहसी, दीन हीन सों काज

भूख सहै पर घास को, नहीं भखै मृगराज
सहज शील गुण सुजन के, वचन वंध होत न भंग

रतनदीप की ज्यों शिखा, बुझत न घात प्रसंग

नाहिं करत उपकार तें, काज सिद्धि यलवान
मुनि उन वसिनी सग मृग, किय अगस्त दधि पान
कहा भयो जो नीच को, देत बड़ाई कोय
कहत विनायक नाम पै, खर न विनायक होय
दुष्ट न छोड़त दुष्टता, बड़ी ठौर हू पाय
जैसे तजत न श्यामता, विष शिव-कंठ बसाय
खल सज्जन सूचीन के, भाग दुहू सम भाय
निगुन प्रकाशै छिद्र को, सगुन सु ढापत जाय
दुर्जन गहत न सुजनता, जतन करो किन कोय
जो पै जौ को रोपिये, कबहु शालि न होय
दान मान सन्मान यश, अपनो अपनी थान
छोटे छोटी गति कहो, मोटे मोटी मान
लाख दुष्ट घेरे रहे, साधु न हो मति हीन
होत न अहि ससर्ग ते, चन्दन मे विष लीन
जो रहीम उत्तम प्रकृति, क्या कर सक्त कुसग
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजग
रहिमन लाख भली करो, अगुनी अगुन न जाय
राग सुनत पय पियत हू, साप सहज धर खाय
कोट यतन कोऊ करो, परै न प्रकृति हि बीच
नल बल जल ऊंचो चढे, अन्त नीच को नीच
ओछे बड़े न हो सकें, लगि सतरौहे बैन

दीरघ होहिं न नेकहू, फार निहारे नैन
गुनो गुनी सब कोउ कहत, निगुनी गुनी न होत
सुन्यो कहू तरु अर्क तें, अर्क समान उदोत

कुण्डलिया

सबै हँसत कर तार दे, नागरता के नाव
गयो गर्व गुन को सबै, बसे गँवारन गाव
बसे गँवारन गाव, गुन न गौरव को पायो
जो कुछ यश तिहि सँचो, सोइ तहँ आय गँवायो
झूठो लागन लग्यो, भले काजन हू कल्मेस
सुकवि गुनन गति सुनत, गँवारे गाहक सबै हँस

सोरठा

फूले फले न बेत, यदपि सुधा वर्षहिं जलद
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलै विरंचि सम

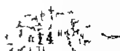
दोहा

मान करो बरु विविध विधि, अशन अमित पय पाग
लागहि भाग न काग कै, त्याग न आपन राग
दुष्ट न छाडे दुष्टता, सज्जन तजे न हेत
काजर तजे न श्यामता, मोती तजे न श्वेत
भाँवरि अन भाँवरि भरो, करो कोटि बकवाद
अपनी अपनी भाँति को, छुटे न सहज सवाद
संगति सुमति न पावही, पडे कुमति के धध
राखो मेरा कपूर में, हींग न होय सुगध

स्फुट

होय भले चाकरन तें, भलो धनी को काम
    ज्यों अगद हनुमान तें, सीता पाई राम
जाही ते कछु पाइये, करिये ताकी आस
    रीते सरवर पर गये, कैसे बुझत पियास
तिनसों विमुख न हूजिय, जो उपकार समेत
    मोर ताल जल पान करि, जैसे पीठ न देत
जो कीजै हित त्याग जनि, निज नेही की ओर
    सर जल पीवत मोर तउ, जात न आनन मोर
रहिमन दानि दरिद्र हो, तऊ याचने जोग
    ज्यों सरितन सूखे परे, कुँवाँ खनावत लोग
ताही को करिये जतन, रहिये जिहि आधार
    को काटै वा डार को, बैठ जाहीं टार
मन्त्री गुरु अरु वैद्य जो, प्रिय बोलैं भय आश
    राज धर्म तन तीन कर, होय वेग ही नाश
जैसो याचक सेइये, तैसो पूरे काम
    सिह गुफा मुक्ता मिलै, स्यार खुरी खुर चाम





करैं कृपा अस 'रामकवि'
गिरा, गजानन' दोय
हिंदी की हितकारिणी
" हिंदि-सुभाषित " होय



❀ सतसई संजीवन भाष्य ❀



सुप्रसिद्ध साहित्य-मर्मज्ञ विवेचक-कला-निधि श्री प० पद्मसिंह जी शर्म्मा रचित विहारी सतसईकी भूमिकाने हिन्दी-संसारमें युगान्तर उपस्थित कर दिया है। सच पूछिये तो महाकवि विहारीकी अनूठी लोकोत्तरानन्ददायिनी और हृदय हारिणी कविताके सम्बन्धमें सहृदय-समाजकी उत्तरोत्तर रुचि बढाना साहित्याचार्य प० पद्मसिंह शर्म्मा के कलमका ही करिशमा है। 'विहारी-सतसई' की भूमिका देखकर मूल पुस्तकका भाष्य पढनेके लिये पाठकोंके हृदय-सागरमें किस प्रकार लालसाकी लहर उठती रहती है इसे उनका दिल ही जानता है। हर्षकी बात है कि काव्यामृत पिपासुओंकी परितृप्तिके लिये प० पद्मसिंह शर्म्मा कृत "सतसई सजीवनभाष्य" का प्रथम भाग शीघ्रही प्रकाशित होने वाला है। इसमें सतसईके १२५ दोहोंका जिस पाण्डित्यसे भाष्य किया गया है वह एक बार पढनेसे ही विदित होगा। कविवर विहारीलालने 'सतसई, के जरासे दोहेमें कैसी करामात भरी है इसका ठीक ठीक ज्ञान इस भाष्यका अध्ययन करने ही से हो सकेगा। सागरको गागरमें भर कर कविवर विहारीलालने तो कमाल किया ही है परन्तु इस कमालका जमाल दिखानेमें शर्म्माजीने

मी अपनी प्रशस्त प्रतिभा शक्तिका पूरा परिचय दिया है
हम इस भाष्यकी विशेष प्रशंसा न करते हुए पाठकोंसे उस
पढ़नेका अनुरोध करते हैं।

इस बार सतसईकी भूमिका (जो पहिले प्रकाशित हो
चुकी है) और भाष्य दोनों एक जिल्दमें एकत्रित कर दि
गये हैं, परन्तु जिन ग्राहकोंके पास तुलनात्मक भूमिका मौजू
है उनको केवल भाष्य भी दिया जा सकेगा।

पुस्तककी छपाई, सफाई, कागज और जिल्द सब उत्तम है

मिलनेका पता —
नेताथ प्रिंटिंग वर्क्स, चाह रहट देहली।

विवेचक—कलानिधि

श्री प० पद्मसिंह जी शर्म्मा के

लेखोंका संग्रह

पुस्तकाकार छप रहा है। इसमें उन सब महत्व-पूर्ण शिक्षाप्रद और मनोरञ्जक लेखोंका समावेश है जो समय २ पर परोपकारी, भारतोदय, भारत-मित्र, प्रतिभा सौरभ, श्री शारदा आदि पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। जिन्हे पुस्तकाकार देखने को सहृदय समाज बहुत दिनोंसे समुत्सुक था। कई ऐसे लेख भी इस संग्रह में सम्मिलित कर दिये गये हैं जो आज तक कहीं प्रकाशित नहीं हुए। इसमे अनेक अनूठी समालोचनाएं भी हैं, जो "सतसई संहार" से कम रोचक नहीं हैं।

"सतसई संहार" शीर्षक सुप्रसिद्ध समालोचना भी इससंग्रह में समावेशित करदी गयी है।

सबसे पूर्व समालोचनात्मक लेखों का संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। इसके बाद शीघ्रही अन्य प्रकारके लेख छापे जायंगे। छपाई, सफाई और कागजकी उत्तमताके ओर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। प० पद्मसिंह जी शर्म्माके लेखोंकी लोक प्रियता से आशा की जाती है कि यह संग्रह प्रेस से निकलते ही धड़ा धड़ बिकने लगेगा। सम्भव है देरसे मंगाने वालों को दूसरे संस्करणकी प्रतीक्षा करनी पड़े इस लिए ग्राहक महाशयों को अभी से अपने नाम रजिष्टर में लिखवाने चाहिये। जो सज्जन पहिले ही अपने नाम ग्राहक सूची में लिखावेंगे वो डाक व्ययसे मुक्त कर दिये जाएँगे

पता—वैताब प्रिंटग वर्क्स
चावड़ी देहली

पद्य-परीक्षा

लेखक—नारायणप्रसाद बेताब

भारतके मशहूर मशहूर कवियोंकी कविताओंपर पिङ्गल शास्त्रानुसार बेलाग समालोचना करके गुण दोष लिखे हैं। अयोध्यासिंहजी उपाध्याय, रामचरितजी उपाध्याय, श्रीधर पाठक मैथिलीशरणगुप्त, नाथूराम शंकर शर्मा, महावीरप्रसादजी द्विवेदी, मिश्रबन्धु, लाला भगवानदीन दीन, त्रिशूल, प० रूपनारायण पाण्डेय इत्यादि कवियोंने जिन जिन छन्दों का व्यवहार किया है, उन हिन्दी छन्दोंके नियम, उर्दू बहरोंके कायदे भी समालोचनाके साथ लिखे गये हैं

यह अपने ढङ्गकी निराली पुस्तक छपकर बिल्कुल तइयार है। मूल्य जिल्द सहित १) रु०

मिलनेका पता

बेताब प्रिंटिङ्गवर्क्स

चाह रहट देहली

उर्दू सुभाषित ।

आजकल हिन्दी कविता और लेखों में उर्दू शेरों के उद्धरण का रिवाज उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, पढ़ने वाले भी उर्दू की चाट का खूब मजा लेते हैं। ऐसी रुचि रखनेवालों के लिये ही यह मसाला तइयार किया गया है। जिस तरह "सुभाषित रत्नभाण्डागारम्" में प्रत्येक विषयके श्लोक मिल जाते हैं, जिस प्रकार इस 'हिन्दी सुभाषित' में हिन्दी के पद्य हर एक विषय पर मिलजाते हैं, इसी तरह 'उर्दू-सुभाषित' मे भी हर मजमून के अशआर आवश्यकतानुसार मिलेंगे।

स्वतंत्र पुस्तक लिखने वाले, अनुवाद करने वाले, नाटक कार, उपन्यास लेखक, व्याख्यान दाता उपदेशक, कथा बाचने वाले, समाचार पत्रों के सम्वाद- दाता इस पुस्तक से बहुत लाभ उठा सकते हैं। वाणी तथा लेख में इस सूक्ति संग्रह के एक दो पद्य डाल दीजिये, मुँ का मजा बदल जायगा और सब स्वादिष्ट होजायगा।

उर्दू कवियों के चुने हुए उर्दू शेर तो हैं ही, परन्तु "विषयशीर्षक" और लिपि हिन्दी है। भाषा ज्योंकी त्यों उर्दू है, हां कठिन शेरो का हिन्दी अनुवाद साथ दे दियाहै।

मिलनेका पता—
वेताब प्रिंटिङ्ग वर्क्स
चाह रहट देहली

पिंगल सार

यदि पृष्ठ कम हैं फिर बुरे तो तलाश कुछ भी न तोलिये
मेरी गुदड़ी को न देखिये मगर इसमें लाल टटोलिये।

प्रियवर। यह कोई पुस्तक नहीं है किन्तु पुस्तकाकार एक पाठावलीके पत्र एकत्रित किये हुए हैं। १९२० ई० में हम एक मासिक पिङ्गल पाठावली निकालते थे, जिसका मूल्य केवल आशीर्वाद था, यहां तक कि छपाई और डाक व्ययार्थ तक भी कुछ नहीं लिया जाता था। पूरे १ वर्षतक यह सिलसिला जारी रहकर बन्द हो गया। उन्हीं पाठों में कुछ पृष्ठ और छपवाकर सम्मिलित कर दिये हैं। उर्दू अरूजको भी हिन्दी सांचे में ढाल कर साथही लगा दिया है। अब यह अपने अङ्गमें पूरी पुस्तक हो गयी है। छन्द कोई नया नहीं, वही प्राचीन आचार्यों के लिखे, प्राचीन ग्रन्थों से लिये हुए हैं किन्तु वर्णन शैली नवीन है, क्यों कि प्रवासी विद्यार्थियोंको घर बैठे डाक द्वारा पढ़ाना अभीष्ट था इस लिये जहां तक सरल और सुगम हो सका, किया गया है।

यह पुस्तक उपन्यासोंकी तरह एक रुपये के ४०० पेज खरीदने वाले भारवाही ग्राहकों के काम की नहीं है क्यों कि इसकी पृष्ठ संख्या (२०x३० का १६ वां साइजमें) केवल ११६ है। मूल्य साधारण जिल्द सहित ॥≡)

मिलनेका पता—

बेताब प्रिंटिङ्ग वर्क्स

शाह दरह देहली

उर्दू सुभाषित ।

आजकल हिन्दी कविता और लेखों में उर्दू शेरों के उद्धरण का रिवाज उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, पढने वाले भी उर्दू की चाट का खूब मजा लेते हैं। ऐसी रुचि रखनेवालों के लिये ही यह मसाला तइयार किया गया है। जिस तरह "सुभाषित रत्नभाण्डागारम्" में प्रत्येक विषयके श्लोक मिल जाते हैं, जिस प्रकार इस 'हिन्दी सुभाषित' में हिन्दी के पद्य हर एक विषय पर मिलजाते है, इसी तरह 'उर्दू-सुभाषित" मे भी हर मजमून के अशआर आवश्यकतानुसार मिलेंगे ।

स्वतंत्र पुस्तक लिखने वाले, अनुवाद करने वाले, नाटक कार, उपन्यास लेखक, व्याख्यान दाता उपदेशक, कथा बाचने वाले, समाचार पत्रों के सम्वाद दाता इस पुस्तक से बहुत लाभ उठा सकते हैं। वाणी तथा लेख में इस सूक्ति-संग्रह के एक दो पद्य डाल दीजिये, तु" का मजा बदल जायगा और सब स्वादिष्ट होजायगा ।

उर्दू कवियों के चुने हुए उर्दू शेर तो हैं ही, परन्तु "विषयशीर्षक" और लिपि हिन्दी है। भाषा ज्योंकी त्यों उर्दू है, हा कठिन शेरो का हिन्दी अनुवाद साथ दे दियाहै ।

पिंगल सार

यदि पृष्ठ कम हैं कि हैं थुर तो नलासे कुछ भी न बोलिये
मेरी गुदडी को न देखि। मगर इसमें लाल टटोलिये।

प्रियवर। यह कोई पुस्तक नहीं है किन्तु पुस्तकाकार एक पाठावलीके पत्र एकत्रित किये हुए हैं। १६२० ई० में हम एक मासिक पिङ्गल पाठावली निकालते थे, जिसका मूल्य केवल आशीर्वाद था, यहा तक कि छपाई और डाक व्ययार्थ तक भी कुछ नहीं लिया जाता था। पूरे १ वर्षतक यह सिलसिला जारी रहकर बन्द हो गया। उन्हीं पाठों में कुछ पृष्ठ और छपवाकर सम्मिलित कर दिये हैं। उर्दू अरूजको भी हिन्दी साचे में ढाल कर साथही लगा दिया है। अब यह अपने अङ्गमें पूरी पुस्तक हो गयी है। छन्द कोई नया नहीं, वही प्राचीन आचार्यों के लिखे, प्राचीन ग्रन्थों से लिये हुए हैं किन्तु वर्णन शैली नवीन है, क्यों कि प्रवासी विद्यार्थियोंको घर बैठे डाक द्वारा पढाना अभीष्ट था इस लिये जहा तक सरल और सुगम हो सका, किया गया है।

यह पुस्तक उपन्यासोंकी तरह एक रुपये के ४०० पेज खरीदने वाले भारवाही ग्राहकों के काम की नहीं है क्यों कि इसकी पृष्ठ संख्या (२०×३० का १६ वाँ साइजमें) केवल ११६ है। मूल्य साधारण जिल्द सहित ॥/)

मिलनेका पता—

बेताब प्रिण्टिङ्ग वर्क्स
चाह रहट देहली

३— 'विज्ञान' जैसे प्रतिष्ठित पत्र में इसके लेखों ने स्थान प्राप्त किया है।

४—'दैनिक आज' जैसे गौरवशाली पत्रने विना निवेदन किये ही इसके लेख उद्धृत किये हैं।

५—अनेक प्रसिद्ध २ विद्वानों ने मुक्त कण्ठसे इसकी प्रशंसा और छपाने के लिये आग्रह किया है।

जो पुस्तक इतने विद्वानों द्वारा संशोधित और प्रशंसित हो क्या वह आपको पसन्द न आयगी ?

शीघ्र चुकने वाला है— जल्दी कीजिए मूल्य ≡)
